★ सितम्बर-अक्टूबर 2020

★ वर्ष 47 ★ अंक 9-10

₹ 15/-

हंसती दुनिया

हँसती दुनिया

• वर्ष 47 • अंक 9–10 • सितम्बर–अक्टूबर 2020 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी

प्रबन्ध–सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
16. समाचार
44. पढ़ो और हँसो
50. कभी न भूलो

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

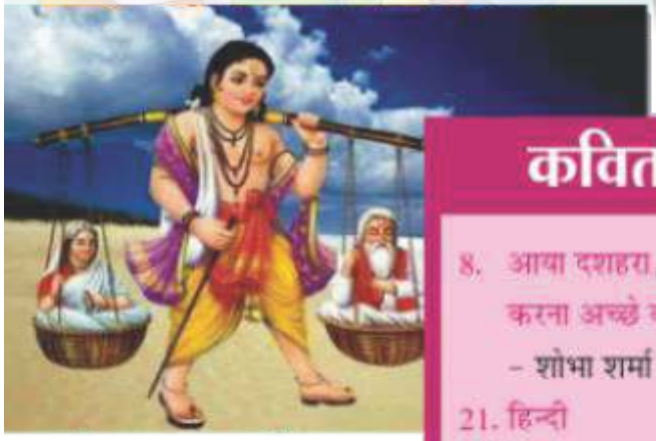

कहानियां

7. दृढ़ निश्चय का फल
– सत्यप्रकाश वर्मा
9. लालच का फल
– दीपांशु जैन
19. बाज़ीगर
– साबिर हुसैन
23. जैसे को तैसा
– गोपाल जी गुप्त
29. पत्थर की गवाही
– डॉ. बानो सरताज
40. केंचुए से आदमी तक
– किशोर डैनियल
43. संतोष की भावना
– अर्चना जैन

कविताएं

8. आया दशहरा,
करना अच्छे काम
– शोभा शर्मा
21. हिन्दी
– दीपक कुमार 'दीप'
21. पुस्तक
– राजेन्द्र निशेश
22. श्रम का मोल सदा होता है
– शिवनारायण सिंह
22. सच्ची सेवा
– महेन्द्र सिंह शेखावत
28. पढ़े-पढ़ायें घर में पायें
– महेन्द्र कुमार 'निर्गुण'
39. स्वच्छता अभियान
– डॉ. गोपालदास नायक
39. वृक्ष
– बलतेज 'कोमल'
48. गौरैया की व्यथा
– मीरा सिंह 'मीरा'
48. भालू आया
– श्रवण कुमार सेठ

विशेष/लेख

17. ऐसे थे डॉ. राधाकृष्णन
– जगतार 'चमन'
18. कहानी फायर ब्रिगेड की
– विभा वर्मा
18. बदलो चिन्तन की धारा
– ऊषा सभरवाल
26. पक्का रबड़ कैस बना
– राधेलाल 'नवचक्र'
33. दृष्टिहीनों की लिपि
का जन्मदाता
– राधा नाचीज़
38. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
– घमंडीलाल अग्रवाल
42. गाँधी जी की सार्थक बातें
– जयेन्द्र
46. समुद्री घोड़ा
– परशुराम शुक्ल
47. पपीहा चालाक पक्षी
– ऋषि मोहन श्रीवास्तव
49. पढ़ाई कैसे करें
– किशनलाल शर्मा

शिक्षा एवं शिक्षक का सम्मान

हम सब विद्यार्थी हैं। विद्यार्थी कोई भी व्यक्ति, लिंग या जाति, समाज या धर्म का भी हो सकता है। विद्यार्थी होना किसी भी उम्र का मोहताज नहीं है अर्थात् किसी भी उम्र का इन्सान किसी भी आयु में, जब भी कुछ सीखना चाहे सीख सकता है। केवल स्कूल में या कॉलेज में जाने वाले ही विद्यार्थी नहीं होते हैं। यह सीखने वाले की इच्छा और इच्छाशक्ति पर निर्भर होता है। इस तरह कोई भी व्यक्ति किसी भी समय अपने जीवन में नई शिक्षा के द्वारा अपनी कार्यशैली में परिवर्तन भी ला सकता है और उसमें लगातार सुधार भी कर सकता है। इस कार्य के लिए उसे किसी न किसी शिक्षक, अध्यापक, कला विशेषज्ञ से सहायता लेनी भी पड़ती है। कार्य में निपुण और कौशलता प्राप्त करने के लिए उसे उस क्षेत्र से जुड़े परिपक्व व्यक्ति से सहायता भी लेनी पड़ती है। जो भी शिक्षा या सहायता एक विद्यार्थी के रूप में ग्रहण करता है तो वह उसका भरपूर उपयोग भी कर पाता है।

फिर भी कई प्रश्न ऐसे होते हैं जिनका उत्तर हमें केवल शिक्षक, अध्यापक या गुरु विशेष से ही मिल पाता है। योग्य शिक्षक, गुरु हमेशा अपने शिष्य की जिज्ञासा का निराकरण करते हैं। कुछ विशिष्ट व्यक्ति या शिक्षक हमेशा अपने विद्यार्थी के प्रश्न का सीधा उत्तर दे देते हैं। कुछ ऐसे भी शिक्षक एवं गुरुजन हैं जो इनका सीधा उत्तर नहीं देते क्योंकि वह पहले प्रश्न को ध्यान से सुनते हैं और देखते हैं कि प्रश्न पूछने वाले ने किस उद्देश्य या प्रयोजन से पूछा है?

इसलिए शिक्षक को पथ-प्रदर्शक का स्थान भी प्राप्त है। कुछ विद्यार्थी केवल शिक्षक की जानकारी का आंकलन करने के या उसका उपहास करने की मंशा रखते हैं। कुछ केवल कोतूहल को शांत करने के लिए ताकि अध्यापक की निगाह में हम अच्छी पढ़ाई करने वाले बने रहें। ऐसे भी विद्यार्थी होते हैं जो केवल जिज्ञासावश नहीं सत्यत: जानना ही चाहते हैं और अपने जीवन में परिवर्तन और निखार लाना चाहते हैं।

अत: गुरुजन उन विद्यार्थियों में अधिक रुचि लेते हैं जो अपनी शिक्षा को पढ़ने और सफल होने के साथ-साथ जीवन में भी उस शिक्षा को व्यवहार में लाने का प्रयत्न भी करते हैं। उनका उत्तम व्यवहार और विकास अपने शिक्षक-गुरु के प्रति आभार का द्योतक होता है। गुरु को केवल प्रणाम कर देने से हमारा कार्य समाप्त नहीं होता। गुरु की शिक्षा को अपने जीवन में व्यवहार के द्वारा दूसरों तक पहुँचाना ही उत्तम-विद्या है। किसी व्यक्ति को आयु में बड़ा होने के कारण सम्मान भी मिल जाता है परन्तु उसका व्यवहार अच्छा होगा तभी उसको आदर भी मिलेगा, उनके प्रति सत्कार एवं श्रद्धा भी होगी और मान्यता भी। इसी प्रकार छोटे बच्चे, बड़े बच्चे और व्यस्क भी अगर उत्तम व्यवहार करेंगे, शिक्षा को व्यवहार में लाएंगे तो उनको भी बड़ों जैसा ही सम्मान, आदर एवं मान्यता भी प्राप्त होगी।

शिक्षा हर समय, हर परिस्थिति में, आयु में, किसी भी देश, धर्म और समाज में मान-सम्मान का कारण बनती है। इसके साथ-साथ नम्र व्यवहार, उत्तम बोलचाल और शिक्षा के विकास की भावना व्यक्ति को सर्वगुण सम्पन्न बना देती है। इसलिए हम शिक्षा एवं शिक्षक का पूरा सम्मान करें ताकि हम सभी अपना-अपना दायित्व समाज के, देश के और अपने प्रति भी पूर्ण कर सकें।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 225

मानुष जन्म नूं सफल करन लई पुन्न दान इश्नान करे।
कर कर पाठ तपस्या कोई देश सेवा ते मान करे।
कोई समझे है उत्तम सेवा सेवा करनी बन्दे दी।
चंगी गल चंगे कम्म करने गल ना करनी मन्दे दी।
पर की चंगा की मन्दा ए इस दी सार नूं जाणे ना।
कहे अवतार है ओह नर मूरख जो एह रमज़ पछाणे ना।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी इन्सान को समझा रहे हैं कि दुर्लभ मानव जन्म की सार समझना आसान नहीं है। संसार के लोग अपने मन के अनुसार कार्य करते हैं और असली रमज़ की पहचान नहीं करते। लोग मनुष्य जन्म को सफल करने के लिए दान-पुण्य करते हैं। तीर्थ स्थानों पर जाकर स्नान करते हैं और यह मान लेते हैं कि पुण्य-दान, स्नान आदि से उनका भवसागर से पार उतारा हो जायेगा। कई तपस्याओं में लग जाते हैं, व्रत-उपवास करके शरीर को कष्ट देकर जीवन को सफल करना चाहते हैं। कई धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करके परमात्मा को खुश करना चाहते हैं।

कुछ लोगों का ध्यान होता है कि जिस देश में जन्म लिया है उस मातृभूमि की सेवा करने से जीवन सफल हो जायेगा। देश सेवा करके लोग गौरव महसूस करते हैं। देश सेवा का कार्य अच्छा है लेकिन सबसे बड़ा कार्य जो इन्सान को करना चाहिए वह है मानव जीवन के सार को सद्गुरु के चरणों में बैठकर समझना। यह जीवन क्यों मिला है, संसार में आकर मुझे क्या करना है और अन्त में मुझे जाना कहाँ है? इन प्रश्नों के उत्तर सद्गुरु के चरणों में बैठकर जानना और फिर सद्गुरु की आज्ञानुसार जीवन जीना ही जीवन को सफल करना है। जो ऐसा करते हैं वे ही सफल हैं, बाकी को तो सन्तों-महापुरुषों ने मूर्ख ही माना है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि लोग समझते हैं कि इन्सानों की सेवा करना उत्तम सेवा है। इन्सान यह भी सोचता है कि अच्छी बात करना, अच्छे काम करना अच्छा है और गलत इन्सान का संग न करना, उसकी चर्चा न करना अच्छा है। इन्सान शुभ कर्म करना चाहता है और अशुभ कर्मों से बचना चाहता है। लेकिन शुभ-अशुभ कर्म भी तो बंधन में डालने वाले ही हैं। सूझवान इन्सान अच्छा क्या है और बुरा क्या है? इसकी सार को सद्गुरु की कृपा से समझकर अपने जीवन को सफल बना लेता है।

बाबा अवतार सिंह जी इन्सान को सचेत कर रहे हैं ताकि वह दान-पुण्य, पूजा-पाठ, जप-तप, शुभ-अशुभ कर्म से ऊपर उठकर जीवन का असली सार समझने का प्रयास करे और इस सर्वव्यापी परमात्मा की जानकारी प्राप्त करके अपना जीवन सफल करे।

संग्रहकर्ता : सुनिधि शर्मा

अनमोल वचन

★ मधुर वचन बोलने से सभी मनुष्य प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिए मीठा वचन ही बोलना चाहिए। मधुर बोलने में कंजूसी किस बात की अर्थात् मीठा बोलने से कुछ खर्च नहीं होता।

★ सदा सत्य बोलो झूठ बोलने वालों का लोग विश्वास नहीं करते और उनका तिरस्कार होता है।

★ कोई बात बिना समझे मत बोलो जब आपको किसी बात की सच्चाई का पूरा पता हो तभी उसे कहो।

★ अपनी बात के पक्के रहो जिसे जो वचन दो उसे पूरा करो जो काम जब करना हो उसे उसी समय करो उसमें देर मत करो।

★ प्रत्येक काम सावधानी से करो किसी काम को छोटा समझकर उसकी उपेक्षा मत करो।

★ सज्जनता एक ऐसा गुण है जो वचन से तो कम किन्तु व्यवहार से अधिक परखा जाता है।

★ पढ़ने का लाभ तभी है, जब उसे कर्म में अपनाया जाये।

★ मनुष्य का असली शृंगार सादा जीवन और उच्च विचार हैं।

★ अन्याय में सहयोग देना, अन्याय करने के ही समान है।

★ वही उन्नति कर सकता है, जो स्वयं को उपदेश देता है।

★ जब सदाचार चुप रहता है तो अनाचार बढ़ता है।

★ व्यक्ति के कार्य उसके विचारों की सर्वोत्तम व्याख्या है।

★ आत्म-निरीक्षण इस संसार का सबसे कठिन किन्तु करने योग्य कर्म है।

★ जैसे सोना अग्नि में चमकता है वैसे ही धैर्यवान आपदा में दमकता है।

★ किसी दूसरे व्यक्ति को विपत्ति में देखकर हँसना आपकी अपनी अज्ञानता दर्शाता है।

★ सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है जो वाणी से नहीं आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।

★ सदैव मुस्कान-सुखमय जीवन का वरदान।

★ कष्ट एवं विपत्तियां मानव को साहस देकर महान बनाती हैं।

★ आवश्यकतायें घटायें, अधिक सुख पायें।

★ स्वच्छता ही स्वस्थता की निशानी है।

प्रेरक-प्रसंग : डॉ. सत्यप्रकाश वर्मा

दृढ़ निश्चय का फल

गुरु जी विद्यार्थी को बार-बार समझा रहे थे, पर विद्यार्थी को पाठ समझ में नहीं आ रहा था। इस पर गुरु जी खीझ उठे। उन्होंने विद्यार्थी से कहा– ज़रा अपनी हथेली तो दिखाओ, बेटा। विद्यार्थी ने अपनी हथेली गुरु जी के आगे कर दी।

हथेली देखकर गुरु जी बोले– बेटा! तुम घर चले जाओ। आश्रम में रहकर व्यर्थ अपना समय बर्बाद कर रहे हो। तुम्हारे भाग्य में विद्या नहीं है।

–क्यों गुरु जी!– शिष्य ने पूछा।

–क्योंकि तुम्हारे हाथ में विद्या की रेखा नहीं है।– गुरु जी ने कहा।

गुरु जी ने एक दूसरे विद्यार्थी की हथेली उसे दिखाते हुए कहा– यह देखो। यह है विद्या की रेखा। यह तुम्हारे हाथ में नहीं है। इसलिए तुम समय नष्ट न करो, घर जाओ। वहाँ अपना काम देखो।

विद्यार्थी ने जेब से चाकू निकाला, जिसका प्रयोग वह दातुन तोड़ने के लिए किया करता था। उसकी पैनी नोंक से उसने अपने हाथ में एक गहरी लकीर बना दी। हाथ लहु-लूहान हो गया। तब वह गुरु जी से बोला– मैंने अपने हाथ में विद्या की रेखा बना दी है, गुरु जी।

गुरु जी ने विद्यार्थी को गले से लगा लिया और बोले– तुम्हें विद्या सीखने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती, बेटा। दृढ़-निश्चय और परिश्रम हाथ की रेखाओं को भी बदल देते हैं।

वह विद्यार्थी था– पाणिनि, जिसने बड़े होकर विश्व-प्रसिद्ध व्याकरण के ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' की रचना की। इतनी सदियां बीत जाने पर भी विश्व की किसी भी भाषा में ऐसा उत्कृष्ट और पूर्ण व्याकरण का ग्रंथ अब तक नहीं बना। ●

दो बाल कविताएं

बाल गीत : शोभा शर्मा

आया दशहरा

विजय सत्य की हुई हमेशा,
हारी सदा बुराई है।
आया पर्व दशहरा कहता,
करना सदा भलाई है।।

रावण था दम्भी अभिमानी,
उसने छल-बल दिखलाया।
बीस भुजा दस सीस कटाए,
अपना कुनबा मरवाया।।

अपनी ही करनी से लंका,
सोने की जलवाई है।

मन में कोई कहीं बुराई,
रावण जैसी नहीं पले।
और अंधेरी वाली चादर,
उजियारे को नहीं छले।।

जिसने भी अभिमान किया है,
उसने मुँह की खाई है।

आज सभी की यही सोच हो,
मेल-जोल खुशहाली हो।
अंधकार मिट जाए सारा,
घर-घर में दीवाली हो।।

मिली बड़ाई सदा उसी को,
जिसने की अच्छाई है।

करना अच्छे काम

घर-बाहर सब तुमको चाहें,
ऊँचा होगा नाम।
छोड़ बुराई करो भलाई,
करना अच्छे काम।।

अच्छे बच्चे मुस्कानों के,
बिखराते हैं फूल।
गलती अगर कहीं हो जाए,
तुरन्त सुधारें भूल।।

अच्छी बातें सीखो हरदम,
सुबह मिले या शाम।

कभी किसी से झूठ न बोलो,
सच के गाओ गीत।
मान और सम्मान मिलेगा,
होगी हरदम जीत।।

वो अपने हैं तुम अपने हो,
सबका अपना धाम।

बाल कहानी : दीपांशु जैन

लालच का फल

एक था राजा। विवेकी और दयालु। प्रजा को प्राणों के समान प्यार करता था। देवता भी राजा से प्रसन्न थे। वे समय-समय पर राजा से मिलने आते रहते थे।

राजा में अनेक गुण थे किन्तु एक अवगुण भी था। राजा सभासदों और मंत्री की हर बात का विश्वास कर लेता था। कभी किसी के कहने पर शंका नहीं करता था।

एक बार तीन देवता राजा के दरबार में आए। शाम होने को थी। दरबार से राजा उठने ही वाला था। तभी द्वारपाल ने देवताओं के आने की खबर दी। सुनकर राजा स्वयं स्वागत के लिए आया। झुककर प्रणाम किया। फिर आदर के साथ उन्हें सिंहासन पर बैठाया।

देवताओं ने राजा से कुशल-मंगल पूछा। राजा ने कहा– देव, आपके आशीर्वाद से सब ठीक है। राज्य में सभी जगह सुख-शान्ति है।

देवता मुस्कुराकर बोले– तुम धन्य हो। तुमने जनकल्याण के कार्य किये। पानी के तालाब, धर्मशालाएं और पाठशालाएं भी बनवाईं। हम तुमसे प्रसन्न है। बताओ, तुम्हारा क्या हित करें?

–देवगण, मेरा सबसे बड़ा हित यही है कि आप मुझे सही रास्ता दिखाएं। कोई गलती हो तो उसे सुधारें। मैं आपकी शरण में हूँ। आज रात आप मेरे अतिथि बनें।

देवताओं ने राजा की प्रार्थना स्वीकार कर ली। राजा ने राजपुरोहित को बुलवाया और कहा– देवों को अतिथिशाला में ले जाओ। इनकी रुचि के अनुकूल भोजन बनवाओ। देखो, देवों के आतिथ्य में कोई कमी न रहने पाए।

राजपुरोहित देवताओं को अतिथिशाला में ले आया। उसने उनकी खूब सेवा की। देर रात तक उनके चरण दबाता रहा। अपनी अच्छाइयों का बखान भी करता रहा।

सुबह हुई। देवताओं ने कहा– राजपुरोहित जी, तुम्हारी सेवा से हम प्रसन्न हैं। कोई वरदान मांग लो।

वह तो यही सोच ही रहा था। देवताओं के गले में अद्‌भुत फूलों की मालाएं थीं। उनसे फैली सुगंध से सारी अतिथिशाला महक रही थी। राजपुरोहित ने कहा– देवगण, आपकी मालाएं बहुत सुन्दर हैं। ऐसी सुगंध वाले फूल इस धरती पर नहीं हैं।

–तुम ठीक ही कहते हो। ये स्वर्ग के फूल हैं। इन मालाओं में अद्‌भुत शक्ति है। जो पहन ले, कभी किसी से पराजित नहीं हो सकता। उसकी हर इच्छा पूरी हो जाती है। उस पर बुढ़ापे का असर भी नहीं होता है।

यह सुनकर राजपुरोहित सोचने लगा– क्यों न वरदान में ये मालाएं ही मांग लूं।

देवताओं ने फिर पूछा– बोलो, क्या चाहते हो?

राजपुरोहित बोला– यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे अपनी मालाएं दे दीजिए।

देवता कुछ देर चुप रहे। फिर उनमें से एक देवता बोले– मेरी माला वही ले सकता है जिसके मन में कभी लालच न आया हो।

–मैं इस योग्य हूँ। आप देख रहे हैं, मेरा जीवन त्याग भरा है। जरा भी लालच नहीं है। माला मुझे दे दीजिए।

देवता ने अपनी माला राजपुरोहित को दे दी।

दूसरे देवता ने कहा– मैं भी अपनी माला तुम्हें देना चाहता हूँ। मगर यह माला वही पहन सकता है जिसने जीवन में कभी झूठ न बोला हो।

–मैं अपने मुँह से अपनी बड़ाई कैसे करूं। झूठ क्या होता है, मैं जानता भी नहीं?– राजपुरोहित ने कहा।

–तब मेरी माला भी पहन लो।– मुस्कुराते हुए देवता ने उसे अपनी माला दे दी।

राजपुरोहित ने ललचाई निगाहों से तीसरे देवता की ओर देखा। वह बोले– जो अपने कर्तव्य का सही ढंग से पालन करता हो, किसी को धोखा न देता हो, वही मेरी माला पहनने का अधिकारी है।

–देव, मैं कृतार्थ हुआ। मेरे विषय में राजा ने आपको सब कुछ बता दिया है। मेरा रास्ता धर्म का है। दूसरों को कर्तव्य का पाठ पढ़ाना ही मेरा काम है। मैं इस माला का भी अधिकारी हूँ।

और तीसरे देवता ने भी अपनी माला राजपुरोहित को दे दी।

मालाएं पहनकर राजपुरोहित गर्व से फूला न समाया। उसी समय राजा का रथ आ गया। देवता राजमहल की ओर चल पड़े।

वे राजा के पास पहुँचे ही थे कि एक सेवक दौड़ता हुआ आया। वह बोला– महाराज, रक्षा कीजिए। राजपुरोहित का दम घुट रहा है। वह मरने ही वाला है।

–क्यों क्या हुआ? अभी तो देवगण उसी के पास से आ रहे हैं।– राजा ने आश्चर्य से पूछा।

महाराज, लगता है राजपुरोहित से कोई गलती हो गई है। देवताओं ने अपनी मालाएं उसे दी थीं। पहनते ही वे छोटी होने लगीं और अब मालाओं के फूल

लोहे की जंजीर जैसे सख्त होकर गर्दन में फंसे हैं। बचाइए, वरना राजपुरोहित मर जाएंगे।– सेवक ने कहा।

राजा ने आश्चर्य से देवताओं की ओर देखा। देवता बोले– राजन्, राजपुरोहित अपने किये की सजा भोग रहा है। वह लालची है, झूठा है। तुम्हें और सारी प्रजा को भी ठगता होगा। उसने हमसे भी झूठ बोला। लालच के वश हो हमारी सेवा की। झूठ बोलकर मालाएं लीं।– कहते हुए देवताओं ने पूरी घटना राजा को बता दी।

अभी बातें हो ही रही थीं कि सेवक रथ में बैठाकर राजपुरोहित को ले आए। उसका गला घुट रहा था। आंखें बाहर को निकलने लगी थीं। मुश्किल से बोल पा रहा था।

राजपुरोहित रथ से उतरकर देवताओं के चरणों पर गिर पड़ा किसी तरह बोला– मुझे क्षमा करें देव! मैंने जो कुछ कहा था, सचमुच मैं वह नहीं हूँ।– कहते हुए उसकी आँखों में आंसू बहने लगे।

देवताओं ने आगे बढ़कर मालाओं को छुआ तो वे फिर पहले जैसी हो गईं। राजपुरोहित ने तुरन्त उन्हें उतारा। वापस करते हुए बोला– मैं इन्हें पहनने के योग्य नहीं हूँ।

देवताओं ने मालाएं हाथों में ले लीं। राजा से बोले– तुम्हारे दरबार में कोई इन्हें पहनने का दावा करता है।

सब चुप। सबने अपना-अपना हृदय टटोला। सभी के अन्दर बुराई निकली। देवता हँसकर बोले– देखा राजन्! प्रजा तुम्हें प्यार करती है इसलिए कुछ नहीं बोलती। तुम जिन लोगों पर विश्वास करते हो वे सब तुम्हें धोखा देते हैं।

राजा को विश्वास तो करना चाहिए, मगर अन्धविश्वास नहीं। उसे सभी के काम की पूरी तरह देखभाल करनी चाहिए। यही सही रास्ता है।

राजा का सारा घमण्ड चूर हो गया। वह बोला– आपने ठीक ही कहा है। मैं भी अपने को कम महान नहीं मानता था जबकि राजा तो प्रजा का सेवक है। आपने गलती बताकर मेरी आंखें खोल दीं।

देवताओं ने मालाएं राजा को सौंप दीं और कहा– इन्हें रखो। जब तक तुम कर्तव्य का पालन करते रहोगे, तब तक ये इसी तरह ताजा रहकर महकती रहेंगी।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

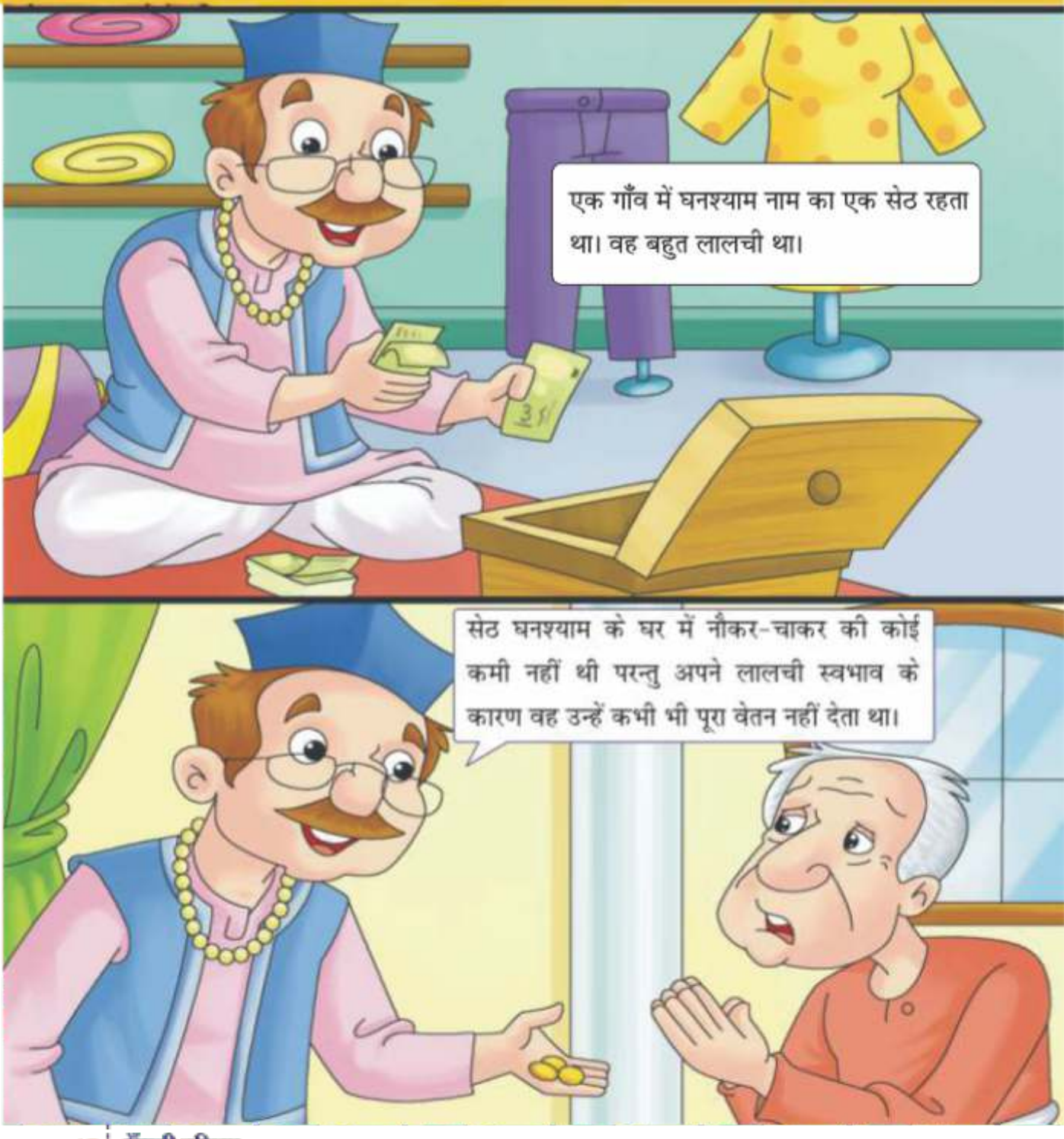

एक दिन घनश्याम के घर से उसकी एक पोटली कहीं गुम हो गई। उस पोटली में पूरे 25 सोने के सिक्के थे।

घनश्याम ने उस पोटली को पूरे घर में ढूंढा परन्तु उसे वह कहीं नहीं मिली। उसने पोटली के बारे में अपने सभी नौकरों से पूछा परन्तु किसी को भी उसके बारे में कुछ नहीं पता था।

कुछ दिनों बाद घनश्याम के घर काम करने वाला नौकर सुरेश अपनी पुत्री रेखा को लेकर आया। सुरेश अपने काम में व्यस्त हो गया और रेखा बगीचे में खेलने लगी। खेलते-खेलते उसे झाड़ियों के बीच में एक पोटली पड़ी हुई दिखाई दी।

सुरेश और रेखा वह पोटली लेकर घनश्याम के पास गए।
घनश्याम ने पोटली को खोलकर देखा और बोला– अरे इसमें तो केवल 25 सिक्के हैं। बाकी 5 सिक्के कहाँ है? सुरेश ने कहा– साहब, इसमें तो सिर्फ 25 ही सिक्के थे।
घनश्याम ने कहा– तुम बेईमानी कर रहे हो। मैं तुम्हें पंचायत में ले जाऊँगा।

शिक्षा : झूठ बोलना एवं लालच करना दोनों ही गलत हैं। इसका फल अवश्य ही मिलता है।

समाचार

वायुसेना में शामिल हुआ नया विमान

भास्कर न्यूज, अम्बाला। सबसे ताकतवर लड़ाकू विमानों में शुमार राफेल भारतीय वायुसेना का हिस्सा बन गया। सुखोई के 23 साल बाद वायुसेना में नया लड़ाकू विमान आया है। फ्रांस से आए 5 राफेल अम्बाला पहुँचे। ग्रुप कैप्टन हरकीरत सिंह के नेतृत्व में पायलटों ने रफाल के लिए विशेष तौर पर तैयार की गई हवाई पट्टी पर लैंडिंग करवाई।

अब राफेल अम्बाला स्थित वायुसेना की 17वीं स्क्वाड्रन गोल्डन ऐरो का हिस्सा बन गए हैं। 5 राफेल में से तीन विमान एक सीट वाले, जबकि दो डबल सीटर हैं। गोल्डन ऐरो में 18 राफेल तैनात होंगे। इनमें से तीन ट्रेनर और बाकी 15 लड़ाकू विमान होंगे। भारतीय वायुसेना के लिए विमानों के 42 स्क्वाड्रन मंजूर किए गए हैं।

34 साल बाद बदलेगी शिक्षा नीति

10+2 सिस्टम खत्म होगा, 12वीं के बाद चार साल में पीजी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने बहुप्रतीक्षित नई शिक्षा नीति को मंजूरी दे दी। 10+2 की जगह 3 से 18 साल के छात्रों के लिए 5+3+3+4 का नया सिस्टम होगा। हर टर्म के लिए उम्र सीमा तय होगी। कक्षा 3, 5, और 8 में एग्जाम होगा। इसके बाद 10वीं और 12वीं में बोर्ड एग्जाम जारी रहेंगे लेकिन इनमें बड़े बदलाव किए जाएंगे। हायर एजुकेशन में भी बड़े बदलावों के प्रस्ताव हैं। 2030 तक नई नीति को पूरी तरह लागू किया जाएगा। 34 साल बाद शिक्षा नीति के मुताबिक राज्यों के एजुकेशन बोर्ड की जगह एक संस्था होगी। कक्षा पाँच तक स्थानीय या मातृभाषा में पढ़ाई होगी। इसके बाद पढ़ाई के माध्यम में तीन भाषाओं को शामिल किया जाएगा। नेशनल हायर एजुकेशन रेगुलेटरी अथॉरिटी बनेगी जो उच्च शिक्षा के मसले देखेगी। एचआरडी मिनिस्ट्री का नाम एजुकेशन मिनिस्ट्री (शिक्षा मंत्रालय) होगा।

बारहवीं के बाद अंडरग्रेजुएट कोर्स चार साल का होगा। चार साल के बाद पोस्ट ग्रेजुएशन की डिग्री मिलेगी। इसके बाद अगर आगे पढ़ना है तो एक साल और एमफिल की तरह पढ़ सकते हैं। एमफिल खत्म हो जाएगा। चार साल के दौरान पढ़ाई छोड़ने का भी विकल्प होगा। अंकों के क्रेडिट ट्रांसफर की व्यवस्था होगी जिससे अगर किसी की पढ़ाई बीच में छूटती है तो वह बाद में कभी भी उसी स्टेज से दोबारा पढ़ाई शुरू कर सके। ग्रेजुएशन स्तर पर साइंस, आर्ट्स, कॉमर्स की दीवार टूट जाएगी। छात्र साइंस और आर्ट्स दोनों विषय लेकर पढ़ाई कर सकते हैं।

प्रेरक-विभूति : जगतार 'चमन'

ऐसे थे डॉ. राधाकृष्णन

भारत में पहली बार शिक्षक दिवस 5 सितम्बर 1962 को मनाया गया। एक बार डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के छात्र उनके जन्मदिन को एक समारोहपूर्वक मनाना चाहते थे। तब राधाकृष्णन ने कहा कि इस दिन को मेरे अकेले के जन्मदिन के तौर पर मनाने के बजाय अगर तुम इसे शिक्षक दिवस के रूप में मनाओ तो मुझे ज्यादा अच्छा लगेगा। तभी पूरे देश में 5 सितम्बर का दिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

डॉ. राधाकृष्णन केवल शिक्षक ही नहीं थे बल्कि वे यूनेस्को और मास्को में भारत के राजदूत भी बने। आगे चलकर वे देश के पहले उपराष्ट्रपति और फिर राष्ट्रपति बने। सन् 1954 में उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वर्ष 1961 में जर्मन 'बुक ट्रेड' ने उन्हें शांति पुरस्कार प्रदान किया।

डॉ. राधाकृष्णन बड़े ही मानवीय और दयालु थे। राष्ट्रपति भवन में उनसे मिलने कभी कोई भी आ सकता था। उस समय उनका वेतन दस हजार रुपये था। लेकिन वे उसमें से केवल 2500 रुपये ही स्वीकार करते थे। बाकी का वेतन वे प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में दान दे देते थे। 17 जुलाई, 1975 को उनका स्वर्गवास हो गया था।

रोचक जानकारी

- ★ सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक पहुँचने में 8 मिनट 18 सेकेण्ड का समय लगता है।
- ★ पृथ्वी का समुन्दर तल से अधिकतम ऊँचा उठा हुआ भाग 15000 मीटर तक हो सकता है इससे अधिक नहीं। इसकी वजह पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति है।
- ★ पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह चंद्रमा है जो कभी इसी का ही भाग था।
- ★ पृथ्वी को सूर्य से ऊर्जा मिलती है और यही ऊर्जा पृथ्वी की सतह को गर्म करती है।
- ★ सूर्य की ऊर्जा का कुछ भाग पृथ्वी और समुन्दर की सतह से टकराकर वायुमंडल में चला जाता है।
- ★ पृथ्वी आकार में सौरमंडल का पांचवा सबसे बड़ा ग्रह है।
- ★ पृथ्वी सौरमंडल का एकमात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है।
- ★ पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है जिससे पृथ्वी पर दिन और रात बनते हैं।

जानकारी : विभा वर्मा

कहानी फायर ब्रिगेड की

सन् 1866 में लंदन शहर में एक भयंकर अग्निकांड हुआ जिसमें 15 हजार भवन जलकर नष्ट हो गए। उनमें सेंटपाल का गिरजाघर भी था। तब अंग्रेजों ने आग से लड़ने के लिए हाथ से चलने वाला पम्प बनाया। जो एक मोटे पाइप द्वारा आग पर पानी का छिड़काव करता था।

बच्चों! क्या तुम जानते हो? दमकल गाड़ी फायर ब्रिगेड की शुरुआत कब हुई?

सन् 1835 में न्यूयॉर्क शहर ने अपने पहले सवैतनिक अग्नि-शामक दस्ते की स्थापना की। प्रारम्भ में सिर्फ उनकी संख्या चार लोगों की थी उन्हें प्रतिवर्ष 250 डॉलर दिया जाता था। अगले वर्ष उनकी संख्या बढ़ाकर 40 कर दी गई। तब उन्हें शामक पुलिस कहा जाने लगा। न्यूयॉर्क में ही सन् 1855 में पहला अग्नि गृह (फायर हाउस) बनाया गया। आज भारत के प्रत्येक बड़े शहर एवं जिला स्तर पर अनेक अग्नि-शामक स्टेशन हैं जिनमें लगभग एक लाख से अधिक व्यक्ति कार्यरत हैं। जहाँ भी कहीं आग लग जाती है तो खबर मिलते ही दमकलें पहुँचकर आग पर काबू पा लेती हैं।

बीते जमाने में जो फायर ब्रिगेड बनाई गई वह आज की तरह न होकर पाँच ताकतवर घोड़ों से खींचने वाली एक पाँच मीटर लम्बी बग्घी ही थी। इस बग्घी में पानी से भरी लोहे की टंकी हमेशा रखी रहती थी। यदि कहीं से सूचना मिलती तो तुरन्त बग्घी को दौड़ा दिया जाता। इस तरह लोग आग पर काबू पाते रहे।

प्रेरक-प्रसंग : ऊषा सभरवाल

बदलो चिन्तन की धारा

एन्ना कैंसर की अन्तिम अवस्था से गुजर रही थी। जिसे चिकित्सकों ने दुसाध्य घोषित कर दिया था। उसके बाएं हाथ को लकवा मार गया था। सिर में बहुत दर्द रहता था। एन्ना लगभग निराश हो चुकी थी। कैंसर का जहर पूरे शरीर में फैलता जा रहा था। इसी बीच उसकी मुलाकात डॉक्टर दात से हुई। डॉक्टर ने उसे 'विधेयात्मक चिन्तन' (अध्यात्मिक सकारात्मक विचार) से अवगत कराया और उसे पूर्ण स्वस्थ हो जाने का विश्वास दिलवाया।

नियमित रूप से एन्ना क्रियाएं करने लगी। इससे उसे आश्चर्यजनक लाभ हुआ। एक वर्ष के बाद जब चिकित्सक ने उसका परीक्षण किया तो वह पूर्णतः स्वस्थ हो चुकी थी। कैंसर एवं पक्षाघात समूल नष्ट हो चुके थे।

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिक वॉल्टर हैंस ने निष्कर्ष निकाला है कि जब निराशावादी चिन्तन शारीरिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है तो कोई कारण नहीं कि आशा एवं उत्साहवर्धक विधेयात्मक चिन्तन अनुकूल परिणाम प्रस्तुत न करे।

बाल कहानी : साबिर हुसैन

बाज़ीगर

जैसे ही चौथी घंटी बजी, इरफान ने अपनी कापी-किताबें उठाईं और कक्षा से बाहर चल दिया।

"इरफान, कहाँ जा रहे हो?"– महेश ने पूछा।

"मैं तो घूमने जा रहा हूँ।"– इरफान बोला।

"तुम तो रोज गणित का पीरियड छोड़ देते हो, तभी तो गणित तुम्हारी समझ में नहीं आता है।"– महेश बोला।

"गणित के सवाल मेरी समझ में नहीं आते, मैं क्या करूँ?" कहते हुए इरफान तेजी से कक्षा से बाहर चला गया।

इरफान लगभग रोज ही गणित का पीरियड छोड़ देता है। गणित उसकी समझ में नहीं आता और गणित के अध्यापक उसे देखते ही सबसे पहले उसे ही 'ब्लैक-बोर्ड' पर सवाल हल करने के लिए बुला लेते और जब उससे सवाल हल नहीं होता तो उसे बेंच पर हाथ उठाकर खड़ा कर देते।

इरफान ने पहले सोचा कि वह पुस्तकालय में जाकर कोई पत्रिका पढ़े लेकिन फिर चल दिया क्योंकि गणित के पीरियड बाद 'इंटरवल' की छुट्टी थी। वह स्कूल से बाहर निकलकर एक ओर चल दिया।

ऐसा भी नहीं कि इरफान पढ़ने से जी चुराता हो लेकिन गणित के सवाल उसकी समझ में ही नहीं आते। उसने कई बार प्रयास किया किन्तु जब सवाल उसकी समझ में नहीं आये तो उसने सजा से बचने के लिए गणित का पीरियड ही छोड़ना शुरू कर दिया।

इरफान कुछ ही दूर गया था तभी उसने ढोल बजने की आवाज सुनी और वह उसी दिशा में चल दिया। वह समझ गया कि बाज़ीगर खेल दिखा रहा होगा। सामने ही सड़क के किनारे भीड़ इकट्ठी थी। इरफान तेजी से वहाँ पहुँच गया। उसने देखा एक आदमी ढोल बजा रहा था और बांसों से बंधी रस्सी पर उससे भी छोटा लड़का चल ही नहीं रहा था बल्कि खेल भी दिखा रहा था।

छोटे से लड़के को रस्सी पर चलते देख इरफान आश्चर्यचकित रह गया। उसने सर्कस में भी लड़कियों को तार पर चलते देखा था, तब उसने अनुमान लगाया था कि उनके जूतों में

चुम्बक है जिसके सहारे वे तार पर चलती हैं लेकिन वह लड़का नंगे पैर रस्सी पर चल रहा था।

खेल समाप्त हो गया। वह लड़का रस्सी से नीचे उतर आया था और दर्शकों से पैसे इकट्ठे कर रहा था। धीरे-धीरे सभी दर्शक चले गये और बाज़ीगर अपना सामान समेटने लगा। इरफान अब भी वहीं खड़ा था। वह बाज़ीगर के लड़के से पूछना चाह रहा था कि वह रस्सी पर कैसे चल रहा था?

"यहाँ क्यों खड़े हो भइया, तमाशा खत्म हो गया अब स्कूल जाओ।"– बाज़ीगर बोला।

"क्या तुम लोग जादू जानते हो?"– इरफान ने पूछा।

"नहीं भइया।"– बाज़ीगर बोला।

फिर यह लड़का रस्सी पर कैसे चल रहा था? इरफान ने आश्चर्य से पूछा।

वह लड़का और बाज़ीगर जोर से हँस पड़े। इरफान उन्हें हँसता हुआ देखने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बाज़ीगर और वह लड़का हँस क्यों रहे हैं?

"तुम लोग हँस क्यों रहे हो?"– इरफान ने पूछा।

"तुम्हारे भोलेपन पर। तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि ये सन्तुलन बनाये रखने के खेल हैं।" – बाज़ीगर बोला।

"क्या मैं भी रस्सी पर चल सकता हूँ?" इरफान ने उत्सुकता से पूछा।

"हाँ-हाँ क्यों नहीं, इसके लिए तुम्हें खूब अभ्यास करना होगा।" वह लड़का बोला।

"केवल अभ्यास करने से मैं रस्सी पर चल सकूंगा।"– इरफान आश्चर्य से बोला।

"हाँ, हम लोग भी अभ्यास ही करते हैं।"

– बाज़ीगर ने कहा।

इरफान को महसूस हुआ कि बाज़ीगर ठीक कह रहा है। जब यह छोटा-सा लड़का अभ्यास से रस्सी पर चल सकता है तो वह अभ्यास से गणित के सवाल क्यों नहीं हल कर सकता। वह निश्चय कर स्कूल वापस चल दिया कि अब वह गणित का पीरियड नहीं छोड़ेगा बल्कि खूब अभ्यास करेगा।

कविता : दीपक कुमार 'दीप'

हिन्दी दिवस पर विशेष प्रस्तुति

हिन्दी से हैं हम और,
हिन्दी से है हिन्दुस्तान।
हिन्दी मेरी हिम्मत है,
इस पर वारूं तन मन प्राण।।

हिन्दी हिन्द की आन है,
गर्व हमें है हिन्दी पर।
है भाषा ये सरल बड़ी,
इसकी अलग पहचान है।।

ज्ञान हो हर भाषा का,
ये उत्तम बात है।
पर मातृभाषा को पीछे रखना,
ये विश्वासघात है।।

हिन्दी हिन्द का गहना है,
इसे सजायें और संवारें।
दुनिया के कोने-कोने में,
आओ इसको और निखारें।।

हिन्दवासी हिन्दी अपनायें,
हिन्दी हो हर घर-घर में।
उन्नत होगा भारत 'दीप',
जीवन के हर सफर में।।

बाल कविता : राजेन्द्र निशेश

पुस्तक

हर पुस्तक ज्ञान बढ़ाती है,
जीने का गुर सिखलाती है।
कैसे बढ़ सकते हम आगे,
जीवन रहस्य बतलाती है।।

यह पुस्तक बड़ी अनूठी है,
नगीने जड़ी अंगूठी है।
इस दुनिया में क्या होता है?
सच ही कहती कब झूठी है।।

जिन खोजा तिन ही पाया है,
यह अक्षर ज्ञान की माया है।
अच्छी पुस्तक ही पढ़नी है,
गुरु जी ने समझाया है।।

कविता : शिवनारायण सिंह

श्रम का मोल सदा होता है

श्रम का मोल सदा होता है,
खेतों में है कृषक देख लो,
कितना स्वेद बहाता।
बैल और हल लिए,
खेत पर सुबह-शाम है जाता।।

आसमान पर सूरज तपता,
धरती को झुलसाता।
चुए पसीना तन से टप-टप,
कृषक नहीं थक जाता।।

अपने श्रम के बल पर है,
खेतों में फसल उगाता।
देता सबको अन्न,
अन्नदाता है सदा कहाता।।

श्रम का मोल सदा होता है,
सबको है समझाता।
श्रम का फल मिलता है,
हमको कृषक यही बतलाता।।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

सच्ची सेवा

करें बड़ों की जो सच्ची सेवा,
पाते हैं वो ही आखिर मेवा।

नहीं कभी वो झूठ बोलते,
इधर-उधर को नहीं डोलते।

मीठी वाणी सदा बोलते,
सबके मन में प्रीत घोलते।

करे परिश्रम करे भलाई,
सच्चे मन से करें पढ़ाई।

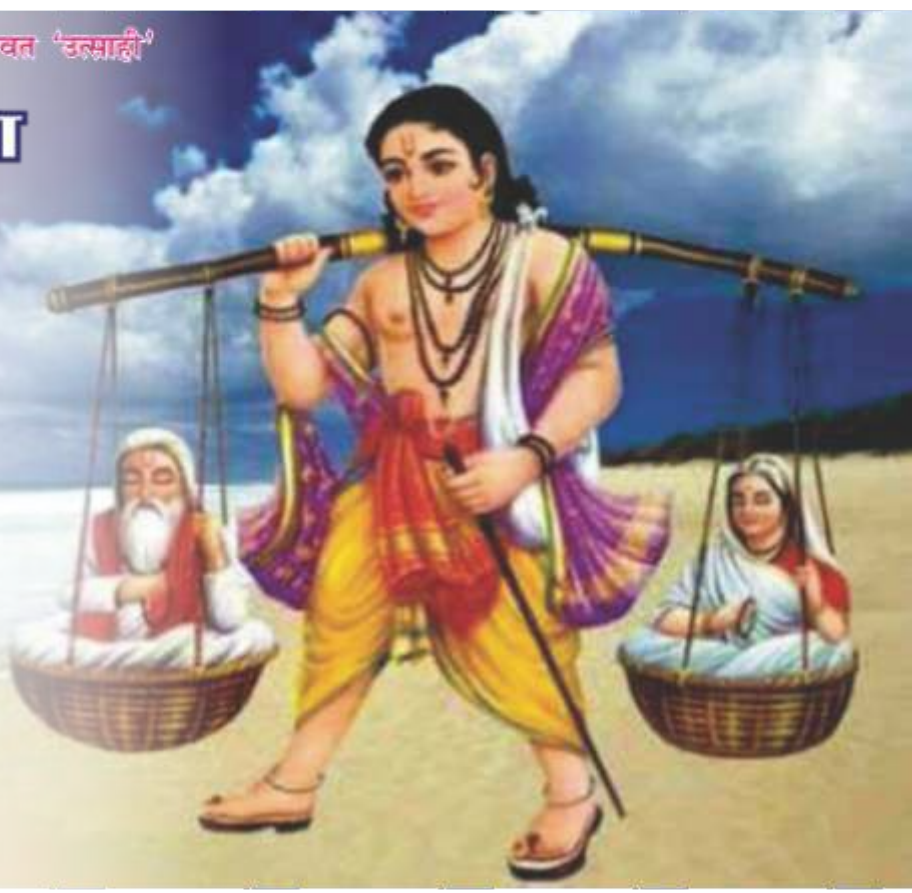

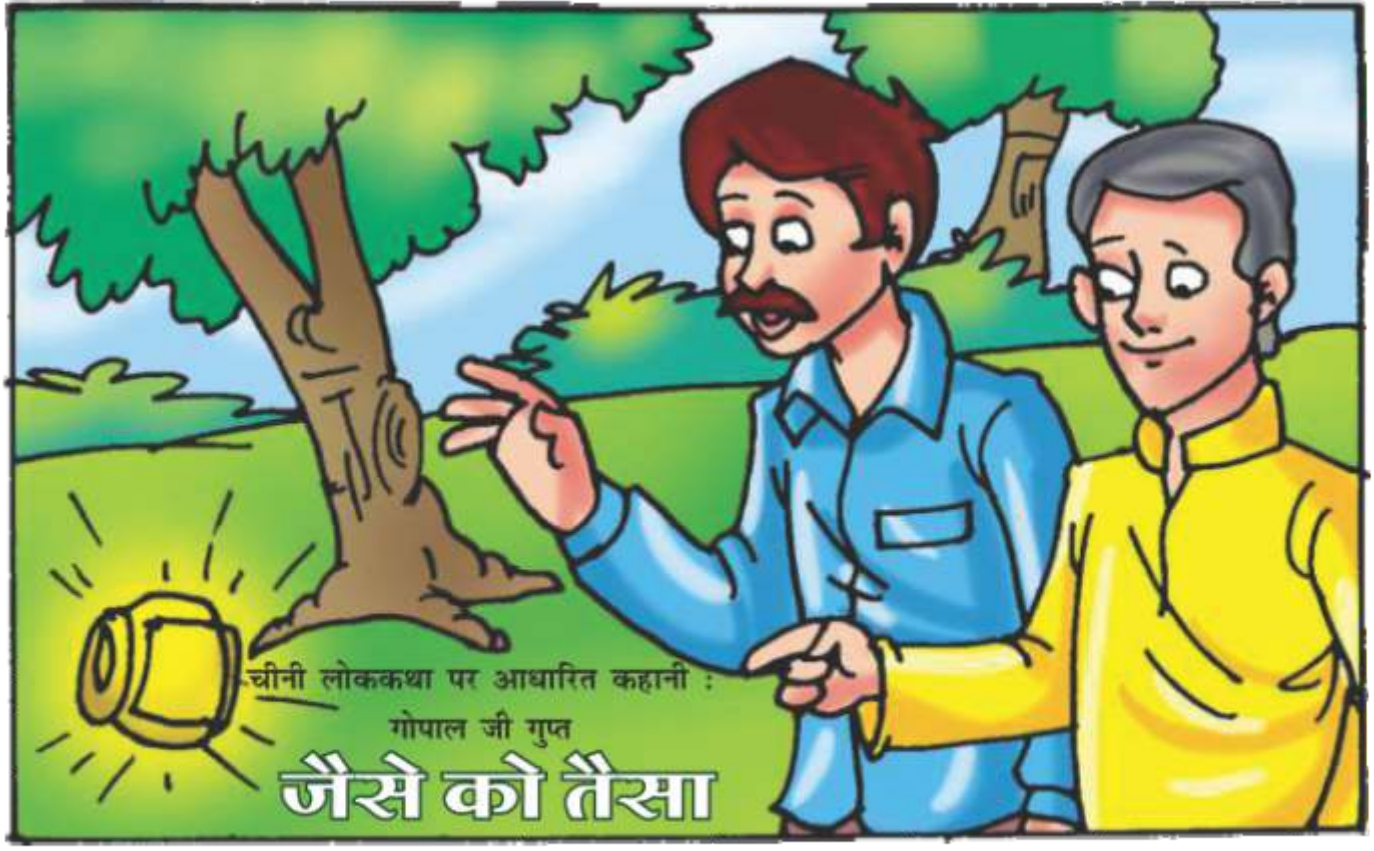

चीनी लोककथा पर आधारित कहानी :

गोपाल जी गुप्त

जैसे को तैसा

आस-पास ही बसे दो गाँवों में रहने वाले दो व्यक्ति रामू और श्यामू एक-दूसरे के अच्छे जान-पहचान वाले थे। जहाँ रामू अत्यन्त उदार, मेहनती, दूसरों पर भरोसा करने वाला ईमानदार था। वहीं श्यामू कंजूस, लालची, कामचोर तथा बेईमान चरित्र वाला था।

एक बार रामू श्यामू के गाँव आया और टहलते और बातें करते हुए वे दोनों गाँव से बाहर निकल पड़े। अचानक दोनों की नजर एक झाड़ी के पास पड़े चमकते हुए छोटे से लोटे पर पड़ी। दोनों एक साथ वहाँ पहुँचे और श्यामू ने लोटा उठा लिया। लोटा था तो छोटा-सा चूँकि वह सोने का लग रहा था इसलिए कीमती तो था ही। श्यामू के मन में लोटा खुद हजम करने का लालच आ गया इसलिये वह रामू से कहने लगा– "भाई रामू! मुझे यह पीतल की लुटिया लग रही है भला सोने की लुटिया कोई क्यों बनवायेगा। इस पर सोने का पानी चढ़ा लगता है।" यह सुनकर रामू ने भोलेपन से कहा– "भाई श्यामू! तुम अपने गाँव में चलकर इसकी जांच करा लेना, किन्तु चूँकि यह हम दोनों को मिला है इसका दाम लगवा लेना और जो दाम मिले उसका आधा मुझे दे देना। मैं उसे खुद न रखकर अपने गाँव के विद्यालय को दे दूंगा ताकि उसका सही उपयोग हो सके। मुझे तुम पर पूरा विश्वास है। मैं तो अपने गाँव लौट रहा हूँ और अगली बार जब आऊँगा तब जो होगा वैसा बंटवारा करूंगा।"

लगभग दो महीने बाद रामू श्यामू के गाँव आया। श्यामू ने उसे देखकर खुशी तो जाहिर की पर मन की मन लोटे के बारे में बहाना सोचने लगा। खाना खाते समय श्यामू ने ही बात शुरू की– "भाई रामू! मैंने लोटा स्वर्णकार को

दिखलाया। उसने उसे जांचने के लिए आग पर रखा तो वह तो पिघल गया लोटा न तो सोने का था न पीतल का; पता नहीं किस धातु का था। मुझे बड़ा अफसोस हुआ। काश! मैं स्वर्णकार के पास न जाता तो कम से कम सुन्दर-सा लोटा सजाने के काम तो आता।''

रामू ने सान्त्वना देते हुए कहा– ''व्यर्थ अफसोस कर रहे हो दोस्त! जो होना था हो गया। कौन-सा हमने उसे कमाया था जो गंवाने का दुख किया जाए?''

श्यामू यह सुनकर खुश हो गया। उसे कीमती लुटिया हजम करने में कोई दिक्कत जो नहीं हुई थी।

अगले दिन रामू अपने गाँव जाने लगा तब उसने श्यामू से कहा– ''तुम तो जानते ही हो मेरा कोई बेटा नहीं है। एक लड़की थी उसका विवाह कर दिया। मेरी पत्नी ने कहा है कि अगर कुछ दिनों के लिए तुम अपने लड़के को भेज दो तो उसका दिल बहल जायेगा और फिर आजकल छुट्टी भी चल रही है इससे पढ़ाई का भी नुकसान नहीं होगा।

श्यामू इसके लिए तुरन्त तैयार हो गया। उसने अपने लड़के को रामू के साथ जाने को कह दिया। रामू उसके बेटे के साथ अपने गाँव लौट आया। गाँव लौटने के अगले दिन वह एक मदारी से मिला तथा उससे कहा कि कुछ दिनों के लिए वह अपना बन्दर लेकर उसके घर पर ही रहे और वह उसका पूरा खर्च सम्भालेगा। उसे बस इतना करना होगा कि वह बन्दर को उसका (रामू का) इतना पालतू बना दे कि बुलाने पर वह उसके पास आ जाए और करतब दिखाने लगे। भला मदारी को क्या एतराज वह अगले ही दिन एक बन्दर के साथ आ गया और बन्दर को उसका पालतू बनाने में जुट गया। जब बन्दर उसका पालतू हो गया तो उसने श्यामू के बेटे को अपनी बहन के घर दूसरे गाँव में भेज दिया और श्यामू को अपने गाँव बुलवा भेजा।

रामू ने श्यामू की बड़ी ही आवभगत की पर अपना चेहरा गमगीन बनाये रखा। खाना खाते समय तक जब श्यामू को अपना बेटा नहीं दिखा तब उसने रामू से उसके बारे में पूछा। रामू ने रोनी सूरत बनाकर कहा– "क्या कहूं दोस्त? मैं बहुत ही शर्मिन्दा हूँ, समझ नहीं पा रहा हूँ कि मैं तुम्हें कैसे बताऊँ?"

यह सुनकर श्यामू काफी घबरा गया उसने रामू ने पूछा– "आखिर बात क्या है, मुझे जल्दी बताओ। मेरा दिल घबरा रहा है।"

सचमुच मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ। मुझे माफ कर देना दोस्त। शायद तुम विश्वास न करो पर यह हकीकत है। कुछ दिनों पहले अचानक उसकी हरकतें बदल गईं। वह बन्दरों की तरह उछलने-कूदने लगा। अगले दिन तो उसका चेहरा बन्दरों जैसा हो गया और उसे पूँछ भी निकल आई। मैं काफी घबरा गया। सोचा शायद वह ठीक हो जाए पर जब ऐसा नहीं हुआ तब ही मैंने तुम्हें बुलवा भेजा। फिर रामू ने उसके बेटे को आवाज दी और उसके बुलाते ही बन्दर का बच्चा वहाँ आ गया। वह उछलने-कूदने लगा कभी वह रामू के कंधे पर बैठ जाता, कभी श्यामू के।

श्यामू यह देखकर घबरा गया। वह समझ गया कि रामू उसके व्यवहार का बदला ले रहा है। वह रामू के पैरों पर गिर गया और उससे क्षमा मांगी। वह शीघ्र गाँव आया और लुटिया लाकर रामू को सौंप दी। रामू ने भी उसके बेटे को बहन के यहाँ से बुलवाकर उसे सौंप दिया। फिर रामू और श्यामू दोनों ने सोने की लुटिया गाँव के विद्यालय को सौंप दिया।

विज्ञान कथा : राधेलाल 'नवचक्र'

पक्का रबड़ कैसे बना?

चांदनी रात थी। अध्यापक विजयसेन ने सेठ जी के तीनों लड़कों के सामने नौका-विहार का प्रस्ताव रखा। वे इसके लिए झटपट तैयार हो गये।

अगले ही क्षण वे सब निकट की एक झील के पास पहुँचे। किनारे पर एक नाव रखी पड़ी थी। थोड़ी ही दूर पर मल्लाह का घर था। अध्यापक महोदय ने लड़कों से कहा– 'कोई एक जाकर मल्लाह को बुला लाओ।'

शशि मल्लाह के घर की तरफ तेजी से दौड़ पड़ा। करीब दस मिनट के बाद मल्लाह को लेकर शशि लौटा। अध्यापक महोदय ने मल्लाह से कहा– 'हम लोग दो घंटे नौका-विहार करेंगे। तुम्हें उचित मजदूरी मिल जाएगी।'

'ठीक है।' मल्लाह झट तैयार हो गया।

पलक झपकते सभी नाव पर सवार हुए। मल्लाह ने नाव खोली। दूसरे ही क्षण नाव ने तट छोड़ दी।

नाव में कहीं पर एक गेंद पड़ी हुई थी। सुमन की नजर उस पर पड़ी। उसने उसे हाथ में लेकर कहा– 'लगता है किसी बच्चे की यह गेंद नाव पर छूट गई है।'

'मेरा पाँच साल का एक बेटा है। उसी की यह गेंद है।'– मल्लाह बोला।

अध्यापक महोदय ने उस गेंद को अपने हाथ में लेकर कहा– 'यह गेंद किस चीज की है?'

'रबड़ की।' सन्तोष बोला।

'सही कहा।' अध्यापक महोदय ने बात आगे बढ़ाई। यह गेंद पक्के रबड़ की बनी है।

'तो फिर?' लड़कों ने उत्सुकता दिखाई।

'जानते हो, पक्के रबड़ का आविष्कार कैसे हुआ?'

'बिल्कुल नहीं।'

'सुनना चाहो तो इसके बारे में बताऊँ?'

'हाँ, हाँ जरूर बताइए।'– तीनों ने एक स्वर से कहा।

अध्यापक महोदय ने कहना शुरू किया। 'गुड ईयर नाम का एक व्यक्ति था। उसे रबड़ से काफी लगाव था। वह न्यूयॉर्क की सड़कों पर जब भी घूमने निकलता। रबड़ की ही बनी हुई पोशाक पहने रहता। वह रबड़ को पक्का बनाने का तरीका ढूंढ रहा था। इसके लिए वह अपने मकान में रबड़ के घोल के साथ अन्य रसायनों को मिलाकर अनेक तरह के प्रयोग किया करता।'

तभी एक मछली झील के जल से ऊपर की ओर उछली और फिर छपाक की आवाज़ के साथ झील में जा गिरी। स्वभावत: सभी का ध्यान उस ओर जा खिंचा।

'मछली बड़ी थी।' सुमन बोला।

'हाँ।' शशि ने हामी भरी।

'अब आगे कहिए।' सन्तोष ने अध्यापक

महोदय का ध्यान विषय-वस्तु की ओर खींचा।

वह बोले– 'इस प्रयोग में गुड ईयर के मकान से रबड़ के घोल की बदबू पड़ोसियों को आती रहती थी। नतीजा होता कि बराबर उनसे उसको झगड़ना पड़ता।'

'फिर?' सुमन ने टोका।

'पड़ोसियों के अलावा इस कार्य में उसे अक्सर अपनी पत्नी से भी झगड़ा हो जाया करता। इसके बावजूद गुड ईयर अपनी धुन का इतना पक्का था कि अपने इस प्रयोग के पीछे अपनी सारी जमा-पूंजी गंवा दी। यही नहीं, कई लोगों से इसके लिए कर्ज भी उसने लिये और जब समय पर अदा नहीं कर सका तो अनेक बार उसे जेल की सजा भी भुगतनी पड़ी।'

'कमाल का आदमी था गुड ईयर।' शशि हैरान होकर बोला।

'बिल्कुल।'

'जब वह जेल चला गया तो उसने अपना प्रयोग छोड़ दिया होगा?' सुमन ने यों ही अध्यापक महोदय से पूछा।

'नहीं जुगाड़ भिड़ाकर जेल में भी उसने अपना प्रयोग चालू रखा। कुछ-न-कुछ वहाँ भी वह करता रहा। उसका प्रयोगी दिमाग चुपचाप बैठे रहना वाला नहीं था।'

सन्तोष की निगाह एकाएक खुले आकाश की ओर गयी। उसने देखा, बादल का एक टुकड़ा चाँद को ढकने के लिए तेजी से उसकी ओर बढ़ रहा था। वह झट बोला– 'देखो, बादल चाँद को ढकने जा रहा है।'

सभी ने एक झलक उस दृश्य की ओर निहारा।

'क्या जेल में गुड ईयर को अपने प्रयोग में सफलता मिली?' शशि ने यों ही पूछ डाला।

'नहीं, वहाँ उसे कोई सफलता नहीं मिली।' अध्यापक महोदय ने बताया।

'तो फिर?' शशि का सवाल बना रहा।

'जेल से छूटकर आने के बाद की बात है। एक दिन ऐसा हुआ कि गुड ईयर की पत्नी घर पर नहीं थी। गुड ईयर के लिए यह एकदम अनुकूल अवसर था। वह बेफिक्र होकर रसोईघर में रबड़ और गंधक

के घोलों का अलग-अलग परीक्षण कर रहा था। अचानक उसकी नजर रसोईघर की खिड़की की ओर जा टिकी। उसने बाहर गई अपनी पत्नी को लौटते देखा।' कहते-कहते अध्यापक महोदय रुक गये। उन्होंने मल्लाह से कहा– 'भई अब लौटो।'

'बहुत खूब!' कहकर मल्लाह नाव को किनारे की ओर ले जाने लगा।

'पत्नी के अचानक लौट आने के कारण गुड ईयर का प्रयोग उस दिन अधूरा ही रह गया होगा?' यह सवाल शशि ने किया।

'ऐसा नहीं हुआ।' अध्यापक महोदय ने अपनी बात पूरी करते हुए आगे कहा– 'पत्नी के लौटने पर उसकी नाराजगी का डर तो उसे था ही, साथ ही अजीब मनोदशा उस समय उसकी हो गयी थी। ऐसे में उसने अपने सामने रखे दोनों घोल आग में उड़ेल दिये। थोड़ी देर बाद वह खुशी और अचरज से चीख-चिल्ला उठा। उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं।'

'क्या हुआ?' तीनों लड़कों ने पूछा– 'क्या उसे सफलता मिल गई?'

'हाँ, दोनों घोल मिलकर आग में पड़ने से वे पक्के रबड़ के रूप में बदल गये थे।'

'अरे वाह! यह आविष्कार तो अनायास ही हो गया।' तीनों लड़कों के मुख से एक साथ निकल पड़ा।

'ऐसा ही समझ लो।' अध्यापक महोदय बोले।

नाव किनारे लग चुकी थी। सभी उतरे। अध्यापक महोदय ने मल्लाह को पैसे दिये। अब सभी घर की ओर बढ़ चले।

कविता : महेन्द्र कुमार 'निर्गुण'

पढ़ें-पढ़ायें घर में पायें

एक नज़र, हँसती दुनिया पत्रिका सन्त निरंकारी।
पढ़ें-पढ़ायें घर में पायें, ज्ञान सामग्री सारी।
खुशियां घर में सब आयें, घर-आंगन को महकायें।
पढ़ें-पढायें घर .....

ज्ञान बढ़ाती है तीनों, मन भी निर्मल रहता है।
अमृत-वचनों में गुरु के सुख सागर बहता है।
श्रद्धा भक्ति भरे हैं मोती, लाखों ही गुणकारी।
पढ़ें-पढ़ायें घर ....

एक नज़र है खबर है देती सन्तों हमें मिशन की।
हँसती दुनिया में है खुशियां, बच्चों के जीवन की।
सन्त निरंकारी रसाला, गुणों से भरी है पिटारी।
पढ़ें-पढ़ायें घर ....

प्रेरक-प्रसंग : डॉ. बानो सरताज

पत्थर की गवाही

एक काज़ी साहब, एक दिन अदालत पहुँचे तो उन्हें अदालत के सामने बहुत भीड़ नज़र आई। वह आगे बढ़े तो भीड़ छंट गई। उन्होंने देखा कि सूप बेचने वाला एक गरीब व्यक्ति धाड़े (दहाड़े) मार-मारकर रो रहा है।

काज़ी साहब उस व्यक्ति को जानते थे। वह उनकी अदालत के बाहर एक अंगीठी पर देगची रखकर गर्म-गर्म सूप बनाता और डबलरोटी, नान के साथ बेचता। अदालत में अपने-अपने कामों से आए लोग नान-सूप लेकर खाते। यही उसकी जीविका का साधन था।

काज़ी साहब ने इधर-उधर नज़रें दौड़ाईं तो उन्हें सूप की देगची जमीन पर पड़ी दिखाई दी। सूप जमीन पर गिरा पड़ा था। काज़ी साहब सारा मामला समझ गए। उन्होंने नर्म आवाज में सूप बेचने वाले से पूछा– "क्या हुआ, क्यों रो रहे हो?"

"जनाब, मैं बर्बाद हो गया। मेरा सारा सूप मिट्टी में मिल गया। अब मैं क्या करूं? मेरी बीवी-बच्चे हम सब भूखे रह जाएंगे। इस घमण्डी आदमी ने मेरा सूप गिरा दिया।"

"काज़ी साहब। मुझसे सुनिए असल बात ...।" –धनवान व्यक्ति आगे बढ़कर बोला।

पर काज़ी साहब ने उसे हाथ के संकेत से रोकते हुए सूप बेचने वाले से पूछा– "इसने सूप कैसे गिराया तुम्हारा?"

सूपवाला बोला– "ये अपने घमण्ड में आसमान की ओर देखते हुए चलकर आये और मुझसे टकरा गये। मैं बचने को पीछे हटा तो इन्होंने अपशब्द कहते हुए फिर एक धक्का दिया। मैं नीचे गिर पड़ा। अंगीठी उलट गई। सूप की देगची गिर गई। सूप मिट्टी में मिल गया। अब मैं क्या करूं?"

काज़ी साहब ने धनवान व्यक्ति की ओर देखकर कहा– "गरीब व्यक्ति है। इसके नुकसान की भरपाई कर दो।"

"मैं भरपाई क्यों करूं? मैंने तो इसका सूप नहीं गिराया?"

"फिर किसने गिराया है?" –काज़ी साहब ने गंभीरता से पूछा।

"इस बड़े पत्थर ने।" उसने पत्थर की ओर संकेत किया। "यही है वह पत्थर जिसने सूपवाले का सूप गिराया है।"

"क्या तुम्हारे पास कोई गवाह है जो तुम्हारी बात का समर्थन कर सके? कह सके कि सूप पत्थर ने गिराया है।"

"एक नहीं कई हैं।" –उसने दर्प से कहा।

"तो ठीक है। मुलजिम पत्थर और गवाहों के साथ अदालत के कमरे में आ जाओ। वहीं न्याय होगा।"

धनवान व्यक्ति ने अपने नौकरों से वह बड़ा पत्थर उठवाया और अपने दोस्तों के साथ अदालत के कमरे में पहुँच गया। सूपवाला अपनी बुझी हुई अंगीठी और पिचकी हुई देगची के साथ उनके पीछे था।

काज़ी साहब के इशारे पर पत्थर मध्य में रख दिया गया। काज़ी साहब ने धनवान व्यक्ति की ओर देखते हुए कहा, "तुम्हारा कहना है कि इस पत्थर ने सूपवाले को धक्का दिया, देगची और अंगीठी गिराई जिससे सूप ज़मीन पर गिर गया।"

"जी हाँ!" धनवान व्यक्ति ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा।

"क्या तुमने इसे अपनी आँखों से यह जुर्म करते देखा है?"

"जी हाँ।"

"क्या तुम्हारे अलावा तुम्हारे सेवकों ने पत्थर को यह जुर्म करते देखा है?"

"ये मेरे सेवक नहीं हैं काज़ी साहब, शहर के रईस हैं, मेरे दोस्त हैं।"

"तो क्या तुम भी रईस हो?" काज़ी साहब ने तत्काल पूछा।

"यकीनन रईस हूँ। रईसों के दोस्त रईस ही हो सकते हैं।"

"मतलब कि तुम सब रईस मिलकर एक गरीब का उपहास कर रहे हो?"

रईस हड़बड़ा गया और बोला- "ऐसी बात नहीं है काज़ी साहब हमने जो देखा, वही बयान कर रहे हैं।"

"कहाँ हैं तुम्हारे गवाह? एक-एक करके पेश करो।" काज़ी साहब ने हुकुम दिया।

धनवान व्यक्ति ने एक व्यक्ति की तरफ संकेत

किया। उस व्यक्ति ने आगे आकर कहा, "मैंने पत्थर को अंगीठी उलटाते और सूप गिरते देखा है।

दूसरा आगे आकर बोला- "मैंने भी देखा है।"

"मैंने भी पत्थर को ऐसा करते देखा है।" -तीसरे ने कहा।

चौथा व्यक्ति आगे बढ़ा था कि काज़ी साहब ने हाथ उठाकर रोक दिया फिर पत्थर की ओर देखकर बोले- "गवाहों के बयान के मुताबिक, ऐ जालिम पत्थर! तूने गरीब सूपवाले की अंगीठी तोड़ी है, देगची पिचकाई है, सूप गिराया है। क्या तुम अपना जुर्म कबूल करते हो?"

पत्थर क्या बोलता भला?

काज़ी साहब ने अपना कलमदान उठाया और पत्थर की ओर देखकर बोले- "तुम अपना जुर्म कबूल नहीं कर रहे हो पर गवाहों के बयानों से तुम पर जुर्म साबित होता है। मैं तुम्हें दस कोड़ो की सजा देता हूँ। सजा अभी इसी वक्त दी जाएगी।"

काज़ी साहब के इशारे पर अदालत के अहलकार ने आगे बढ़कर पत्थर पर कोड़े बरसाना शुरू कर दिया।

धनवान व्यक्ति और उसके रईस साथी चेहरे हाथों में छिपाकर हँसने लगे। काज़ी साहब ने कड़ककर पूछा- "तुम लोग हँस क्यों रहे हो?"

एक रईस बोला- "पत्थर की भी कहीं ज़बान होती है, वह गुनाह कैसे कबूल करेगा?"

"पत्थर की ज़बान नहीं होती?" काज़ी साहब ने बनावटी आश्चर्य से कहा। पर पत्थर ने तो खामोश ज़बान से गवाही दे दी है।

"हमने तो नहीं सुना।" -दूसरे ने हँसते हुए कहा।

"खूब, बहुत खूब!" काज़ी साहब मुस्कुरा पड़े। पत्थर ने न सही तुमने तो जुर्म कबूल कर लिया। पत्थर की गवाही पर ही न।

"हमने? हमने कौनसा जुर्म कबूल किया?" वे सब हड़बड़ा गए।

प्रत्येक प्राणी की ज़बान होती है चाहे वह इन्सान हो या हैवान। अब चूंकि पत्थर के ज़बान नहीं है इसलिए वह जानदार नहीं है, न वह अंगीठी तोड़ सकता है और न वह देगची पिचका सकता है, न सूप गिरा सकता है। तुम सब शरीफ आदमियों ने अदालत में झूठी गवाही दी है इसलिए तुम सबको चालीस-चालीस कोड़ो की सजा दी जाती है। चलो शुरू हो जाओ। काज़ी साहब ने अहलकार से कहा।

वह आगे बढ़ा था कि काज़ी ने कहा- ''रूको, पहले उस रईस को सौ कोड़े मारो जिसने एक गरीब पर जुल्म किया है।''

धनवान व्यक्ति के पसीने छूट गए। गिड़गिड़ाकर बोला- ''मुझे माफ कर दीजिए। मैं इस गरीब के नुकसान की भरपाई के तौर पर उसे सौ सिक्के देने को तैयार हूँ।'' उसने जेब से सिक्के निकालकर काज़ी साहब के सामने रख दिए।

''अदालत तुम्हें माफ करती है।'' -काज़ी साहब ने कहा। यह सुनते ही अन्य रईस भी आगे बढ़कर बोले- ''हमारी सजा भी माफ कर दीजिए। हम चालीस-चालीस सिक्के मजलूम (पीड़ित) को देने को तैयार हैं।''

काज़ी साहब ने स्वीकारोक्ति में सिर हिलाया। झूठी गवाही देने वालों ने सिक्के ढेर कर दिए।

काज़ी साहब ने सूपवाले से कहा- ''ये सिक्के उठा लो। ये तुम्हारे लिए हैं। इस रकम से तुम एक छोटी-सी दुकान खोल लो। सूप के साथ नान तो बेचते ही हो चावल भी बनाकर बेचना। अच्छी कमाई होगी।''

सूपवाला रकम लेकर खुशी-खुशी चला गया।

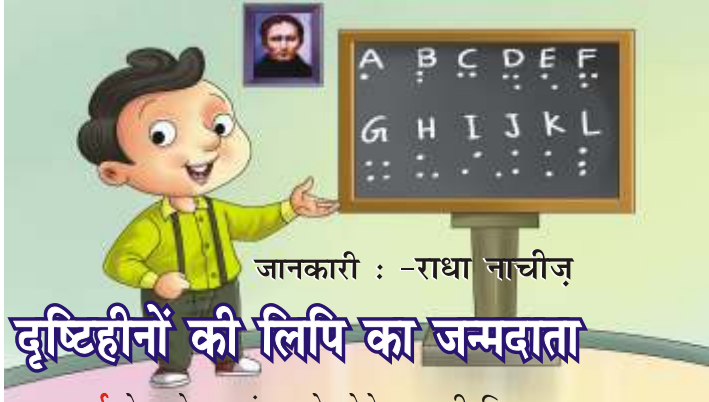

जानकारी : -राधा नाचीज़

दृष्टिहीनों की लिपि का जन्मदाता

लुई ब्रेल ने स्वयं अन्धे होते हुए भी विश्वभर के नेत्रहीनों को नेत्रवालों के समान शिक्षित होने के लिए एक साधन जुटाया। उन्होंने एक ऐसी लिपि का आविष्कार किया, जिसके उभरे हुए अक्षरों को छूकर नेत्रहीन साक्षर हो सकते हैं। इसे ही 'ब्रेल लिपि' कहा जाता है।

लुई ब्रेल का जन्म 1809 में फ्रांस में हुआ था। उनके पिता पेरिस में चमड़े का सामान बनाते थे। बालक ब्रेल ने एक दिन खेलते हुए चमड़ा सीने का औजार आँख में मार लिया। एक आँख की दृष्टि जाने के बाद कुछ दिनों बाद दूसरी आँख भी खराब हो गई। बालक ब्रेल पाँच वर्ष की आयु में अन्धा हो गया। पिता ने उसे दृष्टिहीनों के स्कूल में दाखिल करवा दिया। एक अवकाश प्राप्त सैनिक ने कागज पर उभरे बिन्दुओं से पढ़ना सिखाया। ब्रेल को उस लिपि में कुछ कमियां लगीं। उसने कुछ वर्षों के श्रम से एक नई उभरी हुई लिपि का आविष्कार किया, जिसे दृष्टिहीन पढ़ सकते हैं। आज इस लिपि में अनेक पुस्तकें भी छप चुकी हैं। ब्रेल ने स्वयं दृष्टिहीन होते हुए भी दृष्टिहीनों को जीवन में सफल होने का मार्ग दिखाया।

ब्रेल लिपि से नेत्रहीन लोगों को शिक्षित करने के लिए विश्वभर में हजारों स्कूल खोले गए हैं। इस लोक उपयोगी देन के लिए मानव समाज सदैव ब्रेल का ऋणी रहेगा।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

बेटा अभी तो मैंने मैगी बना दी है। पर यह सेहत के लिए अच्छी नहीं है।
अरे मम्मी मुझे कुछ नहीं होगा।
किट्टी तुम अपना टिफिन क्यों नहीं खा रही?
मुझे घर का खाना अच्छा नहीं लगता मैं तो बर्गर खाऊंगी।
किट्टी हमें घर का खाना ही खाना चाहिए।
मोंटू बर्गर बहुत स्वादिष्ट है। तुम सबको भी बर्गर खाना चाहिए।

किट्टी अब तुम मोमोज़ खा रही हो? तुमने लंच में भी बर्गर खाया था।
चिंटू तुम्हें नहीं खाना तो मत खाओ। मुझे तो खाने दो।
किट्टी ये लो खाना खा लो।
छी पालक, मुझे नहीं खाना, खाना।
किट्टी ऐसा नहीं बोलते। पालक तो अच्छी होती है।
किट्टी मैं तो तुम्हारे लिए दूध लाई थी। तुम चॉकलेट खा रही हो।
नहीं मम्मी, चॉकलेट मेरी फेवरेट है। मैं इसे खाऊँगी।

आह! मम्मी, मेरे दांत में दर्द हो रहा है।
आह! मेरे पेट में भी दर्द हो रहा है।
किट्टी मैंने तुम्हें मना किया था न चॉकलेट और मैगी खाने से। अब हो गया न दर्द। मैं डॉक्टर को बुलाती हूँ।
किट्टी, तुमने कल खाया क्या था?
डॉक्टर साहब, यह घर का खाना नहीं खाती है। बाहर की चीजें ज्यादा खाती है।
मैंने तो चॉकलेट, बर्गर और मोमोज़ खाये थे।
किट्टी, इतना जंक-फूड नहीं खाना चाहिए। ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। अब मैं तुम्हें इंजेक्शन लगाऊंगा।
डॉक्टर अंकल, मुझे इंजेक्शन मत लगाना अब मैं जंक-फूड और चॉकलेट नहीं खाऊंगी। हरी सब्जियां और घर का खाना ही खाऊंगी।

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : व्यक्ति की याद्दाश्त क्यों चली जाती है?

उत्तर : मनुष्य के मस्तिष्क में कुछ ऐसी कोशिकाएं होती हैं जो आँखों द्वारा देखी गई जानकारी का समायोजन करती हैं और उसका संग्रह करती हैं। जब मस्तिष्क पर कभी जबरदस्त चोट लग जाती है या कभी एक्सीडेंट वगैरह हो जाने पर ये कोशिकाएं सिकुड़ जाती हैं। इसको ही याद्दाश्त चला जाना कहते हैं।

प्रश्न : नाल चुंबक किसी दंड चुंबक की तुलना में अधिक शक्तिशाली क्यों होता है?

उत्तर : नाल चुंबक की आकृति U आकार की होती है और दंड चुंबक की आकृति सीधी। U आकृति के कारण नाल चुंबक के ध्रुव अधिक पास-पास रहते हैं जिससे चुंबक की शक्ति बढ़ जाती है और आकर्षण बल भी अधिक लगता है। दंड चुंबक के ध्रुव दूर-दूर होने से चुंबक की शक्ति अपेक्षाकृत कम रहती है। अत: नाल चुंबक अधिक शक्तिशाली रहते हैं।

प्रश्न : हाथों को आगे-पीछे करने की ध्वनि तुम्हें क्यों नहीं सुनाई पड़ती है?

उत्तर : जब तुम अपने हाथों को आगे-पीछे करते हो तो हाथों में कम्पन की आवृत्ति 20 से कम होती है। यह तो सर्वविदित है कि मनुष्य केवल 20 से 20,000 कम्पन प्रति सेकिण्ड के बीच की आवृत्ति वाली ध्वनि ही सुन सकता है। अत: तुम्हें हाथों को आगे-पीछे करने की ध्वनि नहीं सुनाई पड़ती है।

प्रश्न : फर्श पर लुढ़कती हुई गेंद दिशा क्यों बदल लेती है?

उत्तर : वस्तु की दो स्थितियां होती हैं– विराम तथा गति। उसकी स्थिति मे परिवर्तन असम्भव है। लुढ़कती हुई गेंद में गति होती है जब गेंद वायु के सम्पर्क में आती है तो उसकी दिशा में परिवर्तन हो जाता है क्योंकि वायु बल का कार्य करती है। इसी वजह से ही लुढ़कती हुई गेंद

कविता : डॉ. गोपालदास नायक

स्वच्छता अभियान

गली-गली में शोर पुकारे,
स्वच्छता का अभियान है।
रिश्ते नाते बाद में आये,
पहले स्वच्छ का ध्यान है।।

पग-पग पर कूड़ा करकट दे,
पल-पल में बीमारी भर दे।
करें सफाई आसपास की,
स्वस्थ जीवन का मान है।।

पर्यावरण भी यही पुकारे,
स्वच्छता भी यही हुंकारे।
बच्चे बूढ़े हर जन मन है,
जागरुकता का अभिमान है।।

आओ सब मिल करें सफाई,
न जाति न धर्म की खाई।
बस अपना हो एक ही नारा,
स्वच्छता में ही सम्मान है।।

बाल कविता : बलतेज 'कोमल'

वृक्ष

वृक्ष हमारे लिये वरदान।
कुदरत की ये भेंट महान।

चले पवन यह महक बिखेरे,
कुछ देने से मुँह न फेरे।
पक्षियों के लिए मकान,
वृक्ष हमारे लिये वरदान।।

देते फल, लकड़ी व छाया,
दानवीर है इनकी काया।
हैं सबके लिए मेहरबान,
वृक्ष हमारे लिये वरदान।।

करते कुदरत का शृंगार,
धरती जाती है बलिहार।
ऑक्सीजन की उत्तम खान,
वृक्ष हमारे लिये वरदान।।

मत लगाना काट कर ढेर,
इनके बिन जीवन अंधेर।
मत बनना मूर्ख नादान,
वृक्ष हमारे लिए वरदान।।

कहानी : किशोर डैनियल

केंचुए से आदमी तक

एक खेत में एक केंचुआ रहता था। वह खेत की मिट्टी खाकर अपना पेट भरता था। उसने कभी किसी को हानि नहीं पहुँचाई। एक दिन उधर से एक मेंढक निकला। उसने केंचुए को मिट्टी में रेंगते देखा तो उसने सोचा– बड़ा मुलायम है यह तो, इसे खाया जा सकता है। यह सोचकर मेंढक केंचुए के पास पहुँचा और बोला– क्यों रे शैतान, तू खेत का सत्यानाश क्यों कर रहा है, सारे खेत की मिट्टी इस तरह खा जायेगा तो किसान अनाज कहाँ बोयेगा?

केंचुए ने अपना बिना हड्डी का शरीर मोड़कर पीछे देखा और नम्रता से कहा– अरे भाई, मैं तो थोड़ी-सी मिट्टी खाता हूँ उसके बदले में उतनी ही खाद खेत में छोड़ता हूँ और मिट्टी को उपजाऊ बनाता हूँ।

मेंढक को केंचुए का जवाब नहीं, उसका शरीर चाहिये था। इसलिये लपककर केंचुए को निगलना आरम्भ किया और दो-चार झटके में उसे पेट के हवाले कर दिया।

वहीं खेत में एक बिल भी था। एक सांप मेंढक की यह करतूत देख रहा था। उसने मेंढक को मौज से फुदकते देखा तो उसका मन ललचाया। फुफकार मारता हुआ वह बिल में से निकला और बोला– अरे अत्याचारी! तूने उस कमजोर केंचुए को निगल लिया। उसने तेरा क्या बिगाड़ा था? ठहर मैं इस मामले का न्याय करूंगा। मेंढक उत्तर देने वाला ही था कि सांप ने उसे निगलकर मामले का फैसला कर दिया।

खेत के पास ही एक मोर नाच रहा था। उसने सांप को देख लिया था। सांप बिल में घुसने ही वाला था कि मोर ने उसे रोक लिया।

'जाते कहाँ हो? बेचारे मेंढक को क्यों निगल लिया? क्या यही तुम्हारा न्याय है? वह बरसात में सुन्दर लय में टेर लाकर हम सबका मन बहलाता

था। तुमने उसे खा लिया।' यह कहकर मोर ने सांप पर चोंच से वार कर उसे अधमरा कर दिया और धीरे-धीरे उसे निगल गया।

सांप निगलकर मोर आनन्द से खेत में नाचने लगा। उसे देखकर किसान बड़ा प्रसन्न हुआ और जाल डालकर मोर को पकड़ लिया। मोर को लेकर किसान शहर बेचने चल पड़ा। मार्ग में एक घना जंगल पड़ता था। किसान को अकेला देखकर शेर ने दहाड़ मारी जिससे जंगल गूंज उठा। शेर की आवाज सुनकर मोर 'मेयो मेयो' करने लगा। किसान भी चिल्लाया– मुझे बचाओ। जंगल में कुछ लकड़हारे लकड़ी काट रहे थे। शोर सुनकर वे भागकर आ गये और उन्होंने शेर को भगा दिया।

किसान ने उनका धन्यवाद किया और मोर लेकर चलने लगा। लकड़हारों ने उससे पूछा– इस मोर को कहाँ लिये जा रहे हो?

किसान बोला– मैं इसे शहर में किसी को बेच दूंगा।

लकड़हारे बोले– इसने तुम्हारी जान बचाई है, तुम इसे मौत के मुँह में देने जा रहे हो। यह तो जंगल की शोभा है। इसे छोड़ दो।

किसान उनकी बात मान गया। उसने सोचा– अपने थोड़े से लालच के लिए किसी की आजादी नहीं छीननी चाहिए और उसने अपने हाथों से मोर को आज़ाद कर दिया।

प्रेरक-प्रसंग : जयेन्द्र

गाँधी जी की सार्थक बातें

गाँधी जी सादगी और स्वावलम्बन पर विश्वास रखते थे। बाहरी तड़क-भड़क और थोथे आडम्बरों से उन्हें सख्त घृणा थी। एक पैसे की बर्बादी को भी वे देश का नुकसान मानते थे। नोआखली की यात्रा में गाँवों की महिलाएं व पुरुष उनका बहुत स्वागत करते थे। कभी तिलक करके, कभी ताड़ के पत्तों से गाँव को सजाकर बापू को इसमें कोई ऐतराज नहीं होता था किन्तु एक बार देवीपुर गाँव में लोगों ने फूल, जरी, रेशम की पट्टियां, लाल-पीले कागज वगैरह मंगवाकर गाँव को सजाया तथा घी, तेल के दीपक भी जलाए गये। यह सजावट देखकर बापू गम्भीर हो गये। उन्होंने पूछा– कि इस सजावट के लिए पैसे कहाँ से आए?

कुछ व्यक्तियों ने जवाब दिया कि लोगों से चन्दा इकट्ठा कर यह सजावट की है।

इस पर बापू बोले– "यह सजावट एक क्षण भर में कुम्हला जाएगी। यह सब फिजूलखर्ची है। इससे तो मुझे यही लगता है कि मेरी बातों को तुम अपना नहीं रहे हो। जितने फूलों के तुमने हार पहनाएं हैं, उनके बजाय यदि सूत के हार पहनाते तो वे बाद में कपड़ा बनाने के काम भी आते, फिजूल नहीं जाते। फिर तुम तो कार्यकर्ता हो। मैं तो इतना ही कहना चाहता हूँ कि मेरी दृष्टि में यह सब फिजूलखर्ची और पैसे की बर्बादी है। इनसे मुझे अपने सब कार्यकताओं का अन्दाज होता है कि जो कार्यकर्ता एक दिन लोगों के सेवकों के नाम से पहचाने जाते थे, यदि उन्हें लोग ओहदे पर बिठाएं तो वे यों फूल हार पहनने-पहनाने के लालच में कहीं गिरने न लगे।"

हाँ, गाँधी जी की यह बात आज भी कितनी खरी उतरती है।

गाँधी जी के जीवन की यह एक अलग प्रेरक घटना है। अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना हुई। प्रश्न यह आया कि दलितों को इसमें प्रवेश दिया जाए या नहीं। विद्यापीठ के नियामक मण्डल में ऐसे लोग थे जो अस्पृश्यता के हामी थे तथा इस सुधार के लिए तैयार नहीं थे। इस अनिर्णीत प्रश्न को लेकर सदस्य गाँधी जी के पास गये। उन्होंने दलितों को अनिवार्यत: प्रवेश दिये जाने पर बल दिया। इस बात की चर्चा सारे गुजरात में होने लगी। उच्च वर्ग के कुछ धनाड्यों ने गाँधी जी से कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा का कार्य बड़ा धर्म कार्य है। वे उसमें जितनी धनराशि गाँधी जी कहें, देने को तैयार हैं किन्तु दलितों के सवाल को इससे दूर ही रखना चाहिए।

गाँधी जी ने जो उत्तर दिया वह बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा– "विद्यापीठ निधि की बात तो अलग रही, कल अगर कोई मुझे अस्पृश्यता कायम रखने की शर्त पर हिन्दुस्तान का स्वराज्य भी दे तो मैं नहीं लूंगा।"

इसी प्रकार साम्प्रदायिकता के विष को भी वे निरन्तर दूर करने में लगे रहे। उन्होंने यह अनुभव किया कि हमारे देश में जो विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। उन सबमें एकता की भावना की आवश्यकता है। हिन्दू और मुसलमान भारतीय समाज के मुख्य अंग हैं। इन दोनों के पुष्ट होने से ही समाज सशक्त हो सकता है। ऐसा वे मानते थे।

बोध कथा : अर्चना जैन

संतोष की भावना

बहुत पहले की बात है। एक गाँव में पाँच दोस्त रहते थे। पाँचों बड़े गरीब थे। दिन-रात मेहनत करते। जो आय होती वह घर खर्च में कम पड़ जाया करती। इस कारण उन्हें ऊँची ब्याज दर पर धन उधार लेना पड़ता। एक तरफ कर्ज का सूद, दूसरी तरफ गृह खर्च। इस कारण पाँचों परेशान थे।

एक दिन उन्हें खबर लगी कि नदी किनारे कोई महात्मा पधारे हैं। जो अपने चमत्कार से सभी का भला करते हैं। बस, इसी उम्मीद से वे महात्मा के पास पहुँचे। महात्मा के चरण-स्पर्श कर उन्होंने अपनी-अपनी व्यथा कथा सुनाई।

सुनकर महात्मा ने कहा– जिसने जैसा चाहा वैसा ही शीघ्र होगा।

महात्मा के मुख से यह सुनकर पाँचों दोस्त बड़े प्रसन्न हुए। वापस अपने गाँव लौट आये।

चंद दिनों में ही पाँचों की अभिलाषा में खुशी का रंग भरने लगा। कुछ दिनों तक तो वे बड़े प्रसन्न रहे लेकिन बाद में उन्हें अपनी-अपनी टेंशन ने जकड़ लिया।

अब पाँचों पुनः महात्मा के पास पहुँचे। लेकिन महात्मा तपस्या में लीन थे। जब महात्मा ने नेत्र खोले तो पाँचों दोस्तों ने प्रणाम कर कहा– महात्मा जी हम पहले से भी ज्यादा दुखी हो गये हैं।

–भला क्यों?– महात्मा ने मुस्कुराते हुए पूछा।

अब एक-एक करके पाँचों ने अपना दुखड़ा सुनाया तो महात्मा इस निष्कर्ष पर पहुँचे। ये अथाह धन और विलासतापूर्ण जीवन के कारण घोर टेंशन में आ गये हैं।

अब महात्मा ने पाँचों को समझाते हुए कहा– संसार के सुख कभी स्थाई नहीं रहते। सांसारिक पदार्थों के द्वारा वास्तविक सुख और शान्ति की आशा करना बेकार है। वह तो संतोष धारण करने से ही प्राप्त हो सकता है।

–हमें जीवन में संतोष ही चाहिए। अतः आप हमें वापस पहले जैसा ही बना दीजिये।

महात्मा ने कहा– "तथास्तु।"

पाँचों वापस पहले जैसे ही बन गये। हाँ, अब उनमें संतोष की भावना जाग उठी थी।

पढ़ो और हँसो

ग्राहक : सेब क्या भाव है?

फलवाला : सौ रुपये किलो। खरीदने हैं क्या?

ग्राहक : खरीदने नहीं सिर्फ सूंघने हैं।

बेटा : पापा, गुलाब का पौधा लगाए एक हफ्ता हो गया है पर अभी तक उसकी जड़ें नहीं निकलीं।

पिता : लेकिन बेटे, तुम कैसे जानते हो?

बेटा : क्योंकि मैं रोज उसे उखाड़कर देखता हूँ।

यात्री : (तांगेवाले से) स्टेशन तक का कितना लोगे?

तांगेवाला : दस रुपये और सामान मुफ्त ले चलूंगा।

यात्री : अच्छा तो सामान ही ले चलो। मैं पैदल आता हूँ।

सेठ साहब : (नौकर से) श्यामू जरा यह बिजली का तार पकड़ना।

नौकर : (झटका लगने के बाद) मालिक इसमें तो करंट है।

सेठ साहब : ठीक है श्यामू मैंने यही मालूम करना था।

बस कंडक्टर : (यात्री से) इतनी जगह पड़ी है, आप बैठ क्यों नहीं जाते?

यात्री : मैं यहाँ बैठने नहीं आया हूँ, मुझे घर जल्दी पहुँचना है।

एक पड़ोसी : (दूसरे पड़ोसी से) आज तुम इतने दुखी क्यों हो?

दूसरा पड़ोसी : आज हमारे किरायेदार की साइकिल चोरी हो गई।

पहला पड़ोसी : पर इससे तुम्हें क्या लेना-देना?

दूसरा पड़ोसी : अरे कैसे नहीं लेना-देना? अब मैं राशन की दुकान से घर तक राशन किस पर रखकर लाऊंगा।

महिला : (दुकानदार से) सूती साड़ी देना।

दुकानदार : (नौकर से) बनारसी साड़ी देना।

महिला : भाई साहब, बनारसी नहीं सूती साड़ी चाहिए।

दुकानदार : मैडम, सूती साड़ी ही दूंगा। बनारसी तो नौकर का नाम है।

– नरेश कुमार (मण्डला)

बस कंडक्टर : केवल 12 वर्ष से कम के बच्चे ही आधे टिकट पर यात्रा कर सकते हैं।

एक लड़का : मैं 11 वर्ष, 11 महीने और 29 दिन का हूँ।

बस कंडक्टर : तुम्हारा 12वां वर्ष कब पूरा होगा?

लड़का : जब मैं बस से उतरूंगा तब।

एक मकान मालकिन का कुत्ता मर गया। मालकिन बहुत जोर-जोर से रो रही थी। बगल में बैठी नौकरानी भी मालकिन से ज्यादा विलाप कर थी। मालकिन ने चुप होकर नौकरानी से पूछा– कुत्ता मेरा मरा है लेकिन तुम तो मुझसे भी अधिक रो रही हो, ऐसा क्यों?

क्योंकि अब सारे बर्तन मुझे अकेले ही साफ करने पड़ेंगे।– नौकरानी ने जवाब दिया।

एक साइकिल वाला साइकिल पर जा रहा था कि अचानक उसकी टक्कर निखिल से हो गई।

निखिल : अरे भई! घंटी देकर साइकिल चलाया करो।

साइकिल वाला : अरे वाह! अगर घंटी तुम्हें दे दूंगा तो बजाऊँगा क्या?

– सुशान्त सागर (मोतीहारी)

अध्यापक : (छात्रों से) बच्चों! अगर तुम अपनी आँखें बन्द कर लोगे तो तुम्हें कुछ भी दिखाई नहीं देगा।

छात्र : सर! अंधेरा दिखाई दे रहा है।

राजू : रमेश क्या तुम्हारा दांत अभी भी दर्द कर रहा है?

रमेश : पता नहीं वह तो डॉक्टर के पास है।

सोहन : (मोहन से) यार, मुझे कल तक बीस रुपये उधार दे दो।

मोहन : नहीं, मैं रुपये उधार नहीं देता हूँ।

सोहन : तो फिर नगद ही दे दो।

एक आदमी अपने साथी से बोला– मैंने अपने पहले लड़के का नाम 'अंतरंजन' रखा है और दूसरे का नाम 'संतरंजन' रखा है। अब तीसरे का क्या रखें।

–तुम तीसरे का नाम 'दंतमंजन' रख दो।

– उसके साथी ने सलाह दी।

– संजय बिल्दानी (बड़नेरा)

आलेख : परशुराम शुक्ल

एक अद्भुत जलीय प्राणी
समुद्री घोड़ा

समुद्री घोड़ा विश्व में प्राय: सभी महासागरों में पाया जाता है। इसकी सौ से अधिक प्रजातियां हैं किन्तु भारत में केवल पांच प्रजातियां ही पाई जाती हैं। ये केवल गर्मियों के मौसम में ही दिखाई देता है, सर्दियां आरम्भ होते ही ये कहाँ अदृश्य हो जाते हैं? इस सम्बन्ध में जीव वैज्ञानिक अभी तक कोई पता नहीं लगा सके हैं।

समुद्री घोड़े की लम्बाई सिर से लेकर पूंछ तक 6 सेंटीमीटर से लेकर 17 सेंटीमीटर तक होती है तथा वजन पांच ग्राम से लेकर पच्चीस ग्राम तक होता है। इसकी त्वचा इस प्रकार की होती है कि यह जब चाहे गिरगिट की तरह अपना रंग बदल सकता है। इससे यह अपने शत्रुओं को धोखा देने में सफल हो जाता है। समुद्री घोड़े की पीठ पर एक पंख होता है, जिसकी सहायता से यह पानी में धीरे-धीरे तैरता है। तैरते समय इसका पंख इतनी तेजी से हिलता है कि दिखायी भी नहीं देता।

समुद्री घोड़े में बहुत-सी ऐसी विशेषताएं पाई जाती हैं जो किसी अन्य मछली में नहीं होती।

इसका सिर शेष शरीर की सीध में न होकर शरीर के साथ नब्बे डिग्री का कोण बनाता हुआ होता है तथा यह पानी में सीधा खड़ा होकर तैरता है। इसकी आँखों की संरचना भी सामान्य मछलियों से भिन्न होती है। यह अपनी आँखों से एक साथ ऊपर नीचे तथा दायें-बायें देख सकता है।

समुद्री घोड़े का प्रमुख भोजन अत्यन्त छोटे जलीय कीड़े-मकोड़े आदि हैं। यह अपना भोजन चबाता नहीं है बल्कि अग्रभाग में स्थित छोटे से मुँह में चूसकर खाता है। इसकी पतली और लम्बी पूंछ इसे तैरने में मदद तो करती ही है, इसकी सहायता से यह समुद्री घास शैवालों, स्पन्जों आदि से चिपक कर आराम भी कर लेता है। समुद्री घोड़ा मछली परिवार का एक अद्भुत प्राणी है। इसका मुँह देखने में घोड़े जैसा लगता है। अत: इसे समुद्री घोड़ा कहते हैं।

यह विश्व का एकमात्र ऐसा जीव है जो बच्चे सेने का काम मादा नहीं अकेले ही नर समुद्री घोड़ा करता है। नर समुद्री घोड़े के पेट के पास एक भ्रूणदानी होती है जिसमें मादा अंडे देती है। नर समुद्री घोड़ा अपनी भ्रूणदानी में अंडे ग्रहण कर लेने के बाद अंडों को सेता है।

अंडों का विकास तथा शिशुओं का जन्म भ्रूणदानी में ही होता है। इस कार्य में लगभग पैंतालिस दिन का समय लगता है। अंडों में शिशु पनपते ही उसे प्रसव पीड़ा होने लगती है। अब वह अपनी मुड़ी हुई पूंछ की सहायता से किसी समुद्री वनस्पति से लिपट जाता है और अपने शरीर को आगे-पीछे हिलाता है। समुद्री घोड़े के आगे-पीछे

होने से भ्रूणदानी का छोटा सा मुँह खुल जाता है और उससे एक-एक करके नवजात शिशु बाहर आ जाते हैं। यह क्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि पूरी भ्रूणदानी खाली न हो जाए। सामान्यतः एक भ्रूणदानी में पचास अंडों को पोषण करने की क्षमता होती है।

समुद्री घोड़े के बच्चे जन्म के समय पूर्णतया पारदर्शी होते हैं तथा उनके भीतर के अंग बाहर से साफ दिखायी देते हैं। जैसे-जैसे इनका विकास होता है इनके ऊपर हड्डियों का एक कवच सा चढ़ता जाता है। इनके शरीर पर एक थैली होती है। इसकी सहायता से ये तैरने का प्रयास करते हैं। यह भी प्रकृति की अनुपम देन है। यह थैली बहुत संवेदनशील होती है यदि इससे हवा का एक भी बुलबुला बाहर निकल जाये तो इसका सन्तुलन बिगड़ जाता है और ये डूबकर सागर तल में जाकर बैठ जाते हैं।

समुद्री घोड़े के बच्चे सागर के जल का स्पर्श पाते ही तेजी से बढ़ते हैं और दो-तीन महीनों के भीतर पूर्णतया विकसित समुद्री घोड़े के रूप में आ जाते हैं।

जीव-जगत (लेख) :
ऋषि मोहन श्रीवास्तव

पपीहा चालाक पक्षी

पपीहा एक चतुर और समझदार पक्षी है। यह कोयल की तरह चालाक है। मादा पपीहा अपने अंडे 'चरख' नामक पक्षी के घोंसले में रख आती है। चरख उन अंडों को अपना समझता है और इसलिए उन्हें सेता है परन्तु जब अंडों से बच्चे निकलते हैं और वे उड़ने लायक हो जाते हैं तब वे एकदम से फुर्र हो जाते हैं।

पपीहा बरसात के दिनों में 'पी कहां, पी कहां' की आवाज लगाता रहता है। कुछ लोग इसे पानी बरसने का संकेत मानते हैं। कभी पपीहा की आवाज तेज सुनायी देती है तो कभी एकदम से कुछ देर के लिए रूक जाती है।

पपीहा का आकार कुछ-कुछ कबूतर के समान होता है। इसकी पूँछ लम्बी तथा चोंच पीली और हरी होती है। चोंच के सबसे आगे का भाग कुछ काला होता है। एक विशेष बात यह है कि पपीहे की आँखों का रंग पीला होता है। जबकि पपीहे के शरीर का ऊपरी भाग स्लेटी तथा नीचे का भाग सफेद होता है जिस पर भूरे रंग की धारियां बनी रहती हैं।

पपीहे के गले में एक छेद होता है। जैसे ही यह पानी पीता है तब पानी की अधिक मात्रा नीचे गिर जाती है। तब यह चिल्लाने लग जाता है क्योंकि इसकी प्यास पानी गिरने से बुझ नहीं पाती। उस समय इसे गुस्सा आता है।

पपीहे को छोटे फल-फूल एवं कीड़े-मकोड़े खाना पसन्द है।

कविता : मीरा सिंह 'मीरा'

गौरैया की व्यथा

मुन्ने के सपने में आई,
एक दिन एक गौरैया।
सूना है क्यों घर आंगन,
बोलो न मुन्ना भैया।।

जब से गयी तुम परदेश,
चिट्ठी भेजी न कोई संदेश।
इसीलिए घर-आंगन सूना,
ओ मेरी प्यारी गौरैया।।

मुन्ना की सुन बातें प्यारी,
सिसक पड़ी गौरैया बेचारी।
स्वार्थ लिप्त इन्सान,
करते नहीं किसी की फिक्र।।

इन्सान के करतूतों की,
करने लगी वह जिक्र।
अपनी व्यथा कथा,
मुन्ना को कह सुनाई।।

दूभर हुआ था जीना,
अपनी मजबूरी बतलाई।
सुन गौरैया की बातें,
नम हो गई मुन्ना की आंखें।।

तभी मुर्गे ने बांग लगायी,
भोर हुई मुन्ना जाग जा।

बाल कविता :
श्रवण कुमार सेठ

भालू आया

नन्हे-मुन्ने बच्चे दौड़े,
भालू आया चुनरी ओढ़े।

उसे देखने आयी भीड़,
चिड़ियों ने भी छोड़ा नीड़।

डम-डम-डम डमरू बाजे,
उछल कूद कर भालू नाचे,

बच्चे सभी पुकारें कालू,
गुस्से में फिर उछले भालू।

बच्चे सारे हो गए खुश,
रोना सबका हो गया फुस्स।

आलेख : किशनलाल शर्मा

पढ़ाई कैसे करें

रमेश हर साल प्रथम श्रेणी में पास होता था लेकिन इंटर की परीक्षा में फेल हो गया। राकेश पढ़ने में तेज नहीं था। वह हर साल द्वितीय श्रेणी में पास होता था। इंटर की परीक्षा में भी वह द्वितीय श्रेणी में पास हो गया।

हर साल प्रथम श्रेणी में पास होने वाला रमेश इंटर में फेल हो गया जबकि हर साल द्वितीय श्रेणी में पास होने वाला राकेश इंटर में भी पास हो गया। ऐसा क्यों हुआ?

रमेश की आदत थी रटना। वह हर प्रश्न को रट लेता था जबकि राकेश रटने में विश्वास नहीं करता था। वह हर चीज़ को समझने का प्रयास करता था। हर प्रश्न का उत्तर समझकर ध्यान में बिठा लेता था।

जो लोग रटने में विश्वास करते हैं। उनके साथ रमेश जैसा भी हो सकता है। रटने में एक खराबी होती है। अगर आप रटी हुई चीज़ में से कुछ भूल गये तो? ऐसी स्थिति में आपका सारा प्रश्न का उत्तर गड़बड़ा जायेगा। लेकिन आपने किसी चीज़ को समझकर याद किया है तो ऐसा नहीं होगा। जो चीज़ आपने समझकर याद की है उसका उत्तर लिखा जा सकता है।

रमेश और राकेश जैसे उदाहरण आपको अनेक मिल सकते हैं। रटकर पढ़ने वाले पास भी होते हैं। लेकिन कभी-कभी फेल भी हो सकते हैं। जबकि समझकर पढ़ाई करने वाले प्राय: उत्तीर्ण हो जाते हैं।

बच्चो, आप भी हर चीज़ रटने की आदत न डालें। जहाँ रटने की जरूरत है, वहाँ ही रटें। जहाँ पर समझने की जरूरत है वहाँ समझकर ही याद करें।

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल (जौनपुर)

कभी न भूलो

★ गुरु के आदेश ही जीवन को सफल बनाते हैं।
– निरंकारी बाबा जी

★ जो बालक परिश्रम करते हैं, वे सदा सफल होते हैं। इस बात को याद रखो, जब तक तुम कठिन परिश्रम करना नहीं सीखते तब तक तुम्हें सफलता की आशा नहीं करना चाहिए। सफलता के लिए दृढ़-निश्चय और कठिन परिश्रम की आवश्यकता है। – सूक्ति

★ विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं।
– बनार्ड शॉ

★ सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाए सिद्धांतों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए। – अल्बर्ट आइंस्टीन

★ निकृष्ट साधनों से उत्कृष्ट फल की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती। शुद्ध उद्देश्य के लिए साधन भी शुद्ध होने चाहिए।
- आचार्य विरेन्द्र देव

★ अधिक धन होने पर भी जो चिंतित है। वह सबसे बड़ा निर्धन है। कम धन रहने पर भी जो संतुष्ट रहता है वही सबसे बड़ा धनी है।
– अश्वघोष

★ मनुष्य के मन में सन्तोष होना स्वर्ग प्राप्त करने के समान है। – वेदव्यास

★ बीती बात के लिए शोक तथा भविष्य के लिए निरर्थक चिन्ता न करके वर्तमान के लिए प्रयत्नशील रहने वाला ही ज्ञानी है।
– चाणक्य

★ जो मनुष्य खूब सोच-विचार कर काम करता है। आरम्भ किये काम को बिना समाप्त किये नहीं छोड़ता किसी भी समय काम करने से मुँह नहीं मोड़ता और इन्द्रियों को वश में रखता है, वही पंडित है। – विदुर

★ यदि आप चाहते हो कि अच्छे लोग तुमसे घृणा न करें तो शिष्टाचार के नियमों का सावधानी से पालन करो।

★ सदा सत्य बोलो। झूठ बोलने वालों का लोग तिरस्कार करते हैं। – स्वामी शरणानन्द

★ जब दूसरे गलतियां करते हैं तो उनको गिनते न रहिए, उनका विश्वास जीतिए ताकि आप उनकी कमजोरियों को मिटाने में सहयोग दे सकें।

★ किसी भी व्यक्ति को तीन चीजें हमेशा अपने हृदय में संजोकर रखनी चाहिए– नम्रता, दया और क्षमा।

★ सफलता का एक ही मंत्र– पक्का इरादा, दूरदृष्टि, कड़ी मेहनत और अनुशासन।

★ आलस्य करने से प्राप्त किया गया ज्ञान भी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

★ जो जल्दी सोता है और जल्दी उठता है, वह स्वस्थ, सम्पन्न और मेधावी होता है।– लोकोक्ति

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
Kids Divine
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode
on 23rd of every month
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode
on 10th of every month
Bhakti
Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 20th of every month
Voice Divine
DIVINE
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

पाठकों से निवेदन

हिन्दी, पंजाबी तथा अंग्रेजी भाषा की निरंकारी पत्र-पत्रिकाओं: सन्त निरंकारी, एक नज़र तथा हँसती दुनिया के पाठकों से निवेदन है कि पत्र-पत्रिकाओं के रिकॉर्ड को अपडेट किया जा रहा है। अतः आप अपना मोबाइल नं. और ई-मेल पत्रिका विभाग को

ई-मेल :
sulekh.sathi@nirankari.org और

WhatsApp Mobile No. 9266629841
पर अतिशीघ्र भेजें ताकि आपका रिकॉर्ड update किया जा सके।

लेखकों के लिए

☞ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली 'सन्त निरंकारी' विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें अनुभवी लेखकों की रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। अध्यात्म, साहित्य एवं समाज के रचनात्मक समन्वय का प्रयास भी इस पत्रिका द्वारा किया जाता है।

☞ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र 'एक नज़र' की विषय-वस्तु मुख्यतः दार्शनिक लेख, गहरे पानी पैठ, बाल जगत, ज्ञान-विज्ञान, प्रेरक प्रसंग, प्रेरक विभूति आदि हैं। इसके स्तर में सुधार तथा इसे और आकर्षक बनाने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

☞ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक 'हँसती दुनिया' में रोचक कहानियाँ, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ सामग्री जैसे लेख, गीत, कहानी, कविताएं आदि केवल ई-मेल: sulekh.sathi@nirankari.org और editorial@nirankari.org पर ही भेजें ताकि आपकी रचनाओं को समयानुसार प्रकाशित किया जा सके।

—Sulekh 'Sathi'
Managing Editor, Magazine Department

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)